चन्दामामा

जनवरी १९७३

Photo by: MADAN GOPAL

रसीली...प्यारी...मज़ेदार.

सिर्फ़ २५ पैसे

नयी पारले

पॉपिन्स

फलों के स्वादवाली गोलियां

अनानास, नींबू, नारंगी, मोसंबी व रास्पबेरी—
पांच फलों के स्वादवाली १३ स्वादिष्ट गोलियां—
हरेक शानदार, कम कीमत के पैक में।

पॉपिन्सका स्वाद चखो, पांच फलों का मज़ा लो

everest/122b/PP hin

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये । यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे । आपके सहयोग की आशा है ।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास - २६

खाँसी-जुकाम
पल भर में आराम...

अमृतांजन
के ज़रिये!

सर्दी, सरदर्द, मोच और पेशियों के दर्द से शीघ्र छुटकारा पाने के लिये अमृतांजन मालिश कीजिये। पिछले ७५ वर्षों से भी अधिक समय से यह एक निर्भरयोग्य घरेलू दवा है। अमृतांजन की एक शीशी हमेशा पास रखिये। यह किफायती 'जार' और कम कीमत वाले डिब्बों में भी मिलता है।

AM 5980A

अमृतांजन—सर्दी-जुकाम और दर्द के लिए १० दवाओं का एक अपूर्व मिश्रण!

अमृतांजन लिमिटेड

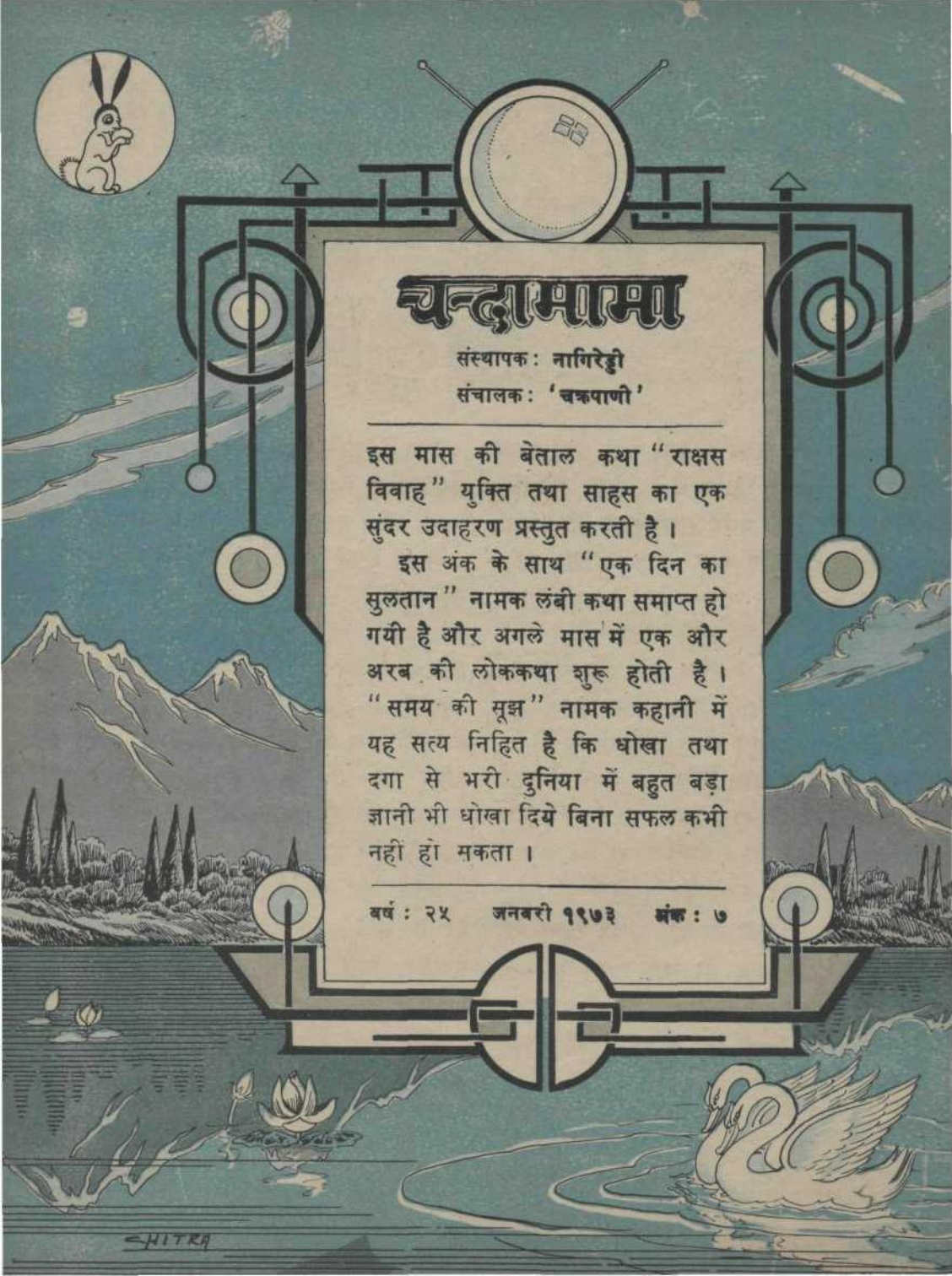

चन्दामामा

संस्थापक : नागिरेड्डी
संचालक : 'चक्रपाणी'

इस मास की बेताल कथा "राक्षस विवाह" युक्ति तथा साहस का एक सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती है।

इस अंक के साथ "एक दिन का सुलतान" नामक लंबी कथा समाप्त हो गयी है और अगले मास में एक और अरब की लोककथा शुरू होती है। "समय की सूझ" नामक कहानी में यह सत्य निहित है कि धोखा तथा दगा से भरी दुनिया में बहुत बड़ा ज्ञानी भी धोखा दिये बिना सफल कभी नहीं हो सकता।

वर्ष : २५ जनवरी १९७३ अंक : ७

CHITRA

खोयी अंगूठी

एक शबर राजा के यहाँ इल्ल तथा मल्ल नामक दो नौकर थे। दोनों विश्वास पात्र भी थे। मगर राजा इल्ल को ज़्यादा चाहता था और मल्ल से द्वेष करता था।

एक दिन राजा ने दोनों को बुलवाकर कहा–"तुम दोनों छुट्टी लेकर अपने-अपने घर चले जाओ। तीन दिन बाद यहाँ पर एक मेला लगेगा, उस दिन ज़रूर आ जाओ। लो, तुम दोनों ये इनाम ले लो।" इन शब्दों के साथ राजा ने इल्ल को एक छोटा सा पत्थर तथा मल्ल को एक जमींकद दे दिया। दोनों राजा को प्रणाम कर अपने घर चल पड़े।

राजा ने इल्ल को एक पत्थर दिया था, इसलिए वह मन ही मन राजा पर रुष्ट था। उसने कहा–"यह कमबख्त पत्थर ढोकर घर क्यों ले जाऊँ? कहीं किसी झाड़ी मे फेंक देता हूँ।"

"नहीं, नहीं, ऐसा मत करो। मैं यह जमींकंद ढो नहीं पा रहा हूँ। हम अपनी अपनी चीज़ें बदल लेंगे।" मल्ल ने कहा।

दोनों अपने अपने इनाम बदल कर घर चले गये। इल्ल ने कंद पकवा कर खा लिया। मल्ल घर के आंगन में चांदनी रात में बैठकर उस पत्थर की जांच कर रहा था। तभी उसे पत्थर की फटास में से कोई चीज़ चमकती दिखाई दी। उसने पत्थर को तोड़कर देखा। उसमें बड़ी निपुणता के साथ बिठाये गये सोने के गहने निकल आये।

राजा का पक्षपात मल्ल को समझते देर न लगी। वे गहने इल्ल के वास्ते सुरक्षित किये गये थे, फिर भी मल्ल ने उन गहनों को अपने लिऐ रख लिया।

तीन दिन बाद मेला लगा। उस दिन राजा के यहाँ मनोरंजन का इंतज़ाम था।

राजेश वर्मा

दावत भी दी गयी। दावत में बहुत से लोग आये। भोजन करते समय राजा ने सबका परामर्श किया, उस वक़्त मल्ल के शरीर पर सोने के आभूषण देख राजा ने पूछा–"ये आभूषण तुम्हें कहाँ से मिले?"

मल्ल ने राजा का सच्ची बात बतला दी। इल्ल ने इस बात के लिये राजा से माफ़ी भी मांग ली कि पत्थर का मूल्य न जानने के कारण उसने पत्थर को मल्ल के हाथ कैसे सौंप दिया।

राजा ने इल्ल को क्षमा कर दिया। मगर मल्ल का वध करने का निश्चय किया। दावत के समाप्त होने पर सब लोग जब विदा लेकर जा रहे थे तब मल्ल ने राजा से कहा–"मैं ने ये आभूषण रख लिये हैं, इसलिए आप मुझे क्षमा करें। हमें जो इनाम मिले थे, उन्हें हमने बदल लिये हे। जमीकंद का इल्ल और उसकी पत्नी ने खा लिया।"

"मैं तुम्हे क्षमा करता हूँ। इसके प्रमाण स्वरूप मे तुम्हें यह अंगूठी इनाम में देता हूँ। तुम इसे सुरक्षित रख कर अगले सप्ताह मुझे दिखा दो, मगर याद रखो कि यदि तुमने इसे खो दी, तो तुम्हें मृत्यु-दण्ड दिया जायगा।" राजा ने कहा।

मल्ल ने भांप लिया कि राजा उससे ईर्ष्या करता है और उसका अंत करने की सोच रहा है। इसलिए उसने उस अंगूठी को बड़ी सावधानी के साथ बचाकर रखना चाहा। मगर उसकी झोंपड़ी में अगूठी को

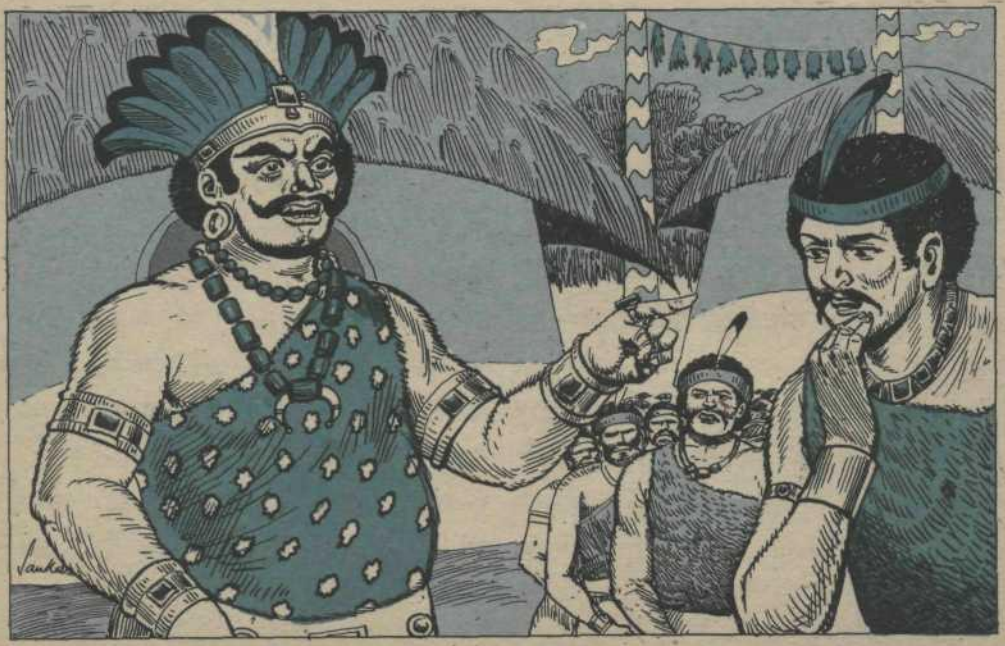

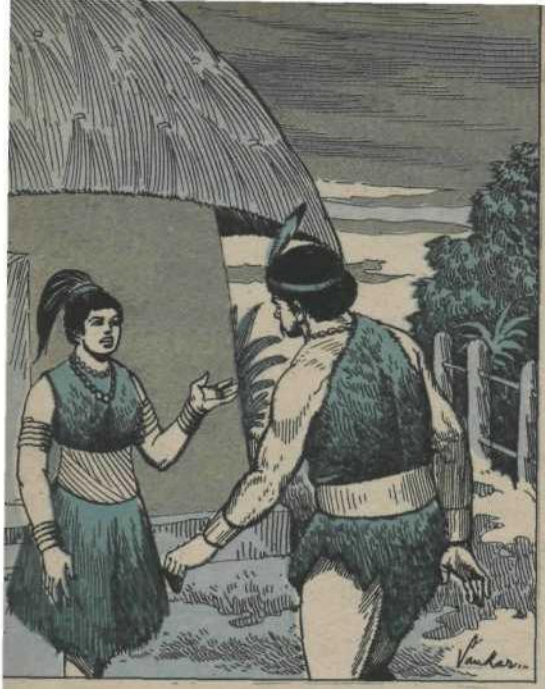

छिपाने की कोई अच्छी जगह न थी। अतः उस रात को जब उसकी औरत और पुत्र सो रहे थे, तब उसने अपने घर की मिट्टी की दीवार में छेद बनाकर उस में अंगूठी रख दी और गीली मिट्टी से उस छेद को भर दिया। तब इस तरह मिट्टी को समतल बनाया कि कोई उसे आसानी से पहचान न पाये। सवेरे तक गीली मिट्टी सूख गयी और उस जगह भी दीवार का रंग आ गया। तब मल्ल ने सोचा कि अब उसकी जान को कोई खतरा नहीं है।

इस घटना के दो दिन बाद राजा ने मल्ल की पत्नी को बुलवाकर कहा– तुम्हारे पति ने अंगूठी कहीं छिपा रखी है, उसे लाकर मुझे दे दो। तुम्हें मैं बहुत सा सोना दूंगा। पर यह बात तुम पहले अपने मर्द से न बताओ जब वह बहुत सा सोना देखेगा, तब वह आश्चर्य चकित हो जायगा।"

मल्ल की औरत बिलकुल यह बात नहीं जानती थी कि राजा उसके मर्द के प्राण लेने के ख्याल से वह अंगूठी मांग रहा है। उस औरत ने घर जाकर सब जगह अंगूठी की खोज की, मगर कहीं उसे वह अंगूठी दिखाई नहीं दी।

उस दिन शाम को अपने मर्द के घर लौटते ही उस औरत ने पूछा–"तुम्हारे पास कोई अंगूठी थी, वह कहाँ गयी?"

मल्ल ने सोचा कि अंगूठी को उसकी औरत ने देख लिया है और कहा–"मैंने उसे दीवार में छिपा रखी है।"

दूसरे दिन मल्ल जब काम पर घर से बाहर निकला, तब उसकी औरत ने सारी दीवारों की जाँच की, जहाँ जहाँ उसे संदेह था, वहाँ वहाँ उसने दीवार को खुरेदकर देखा, आखिर उसे अंगूठी मिल ही गयी। उसने झट उस छेद को मिट्टी से भर दिया और अंगूठी लेकर राजा के पास दौड़ गयी।

राजा ने वह अंगूठी ले ली और बदल में एक छोटी सी थैली भर सोना दे दिया।

वह बड़ी खुश हुई और घर लौटकर उसने सोने वाली उस थैली को घर के पिछवाड़े में गाड़ दिया।

एक सप्ताह पूरा हो गया। तब राजा के एक नौकर ने आकर मल्ल से कहा– "तुम्हें राजा ने अंगूठी लेकर जल्दी आने को बताया है।"

मल्ल ने झोंपड़ी में जाकर अंगूठी की खोज़ की, जब उसे मालूम हुआ कि अगूठी गायब है, तब वह चिल्ला उठा अब मेरी आयु खतम हो चुकी है।"

उसने अपनी औरत को बुलाकर पूछा– "कहीं तुमने अगूठी देख ली?" लेकिन उसने यह सोचकर कि वह मार बैठेगा, डर के मारे साफ़ बताया कि उसने अंगूठी नहीं देखी। मल्ल निराश हो पैर घसीटते राजा के पास पहुँचा और बोला–"महाराज, मै अंगूठी दिखा नहीं सकता।"

"तब तो तुम्हारे लिए मौत की सज़ा निश्चित है।" राजा ने कहा।

"महाराज, यह सजा कल तक मुल्तवी रखिये, इस बीच अपने सारे काम-काज सभाल लेता हूँ।' मल्ल ने बिनती की।

"अच्छी बात है, कल सवेरे मै कसाइयो को तुम्हारे घर भेज देता हूँ।" राजा ने कहा।

मल्ल हताश हो घर की तरफ़ चल पड़ा, उसका मन अत्यंत विकल था। उसने सोचा–"कल में किसी भी तरह मरने जा रहा हूँ, इसलिए आज नाले में

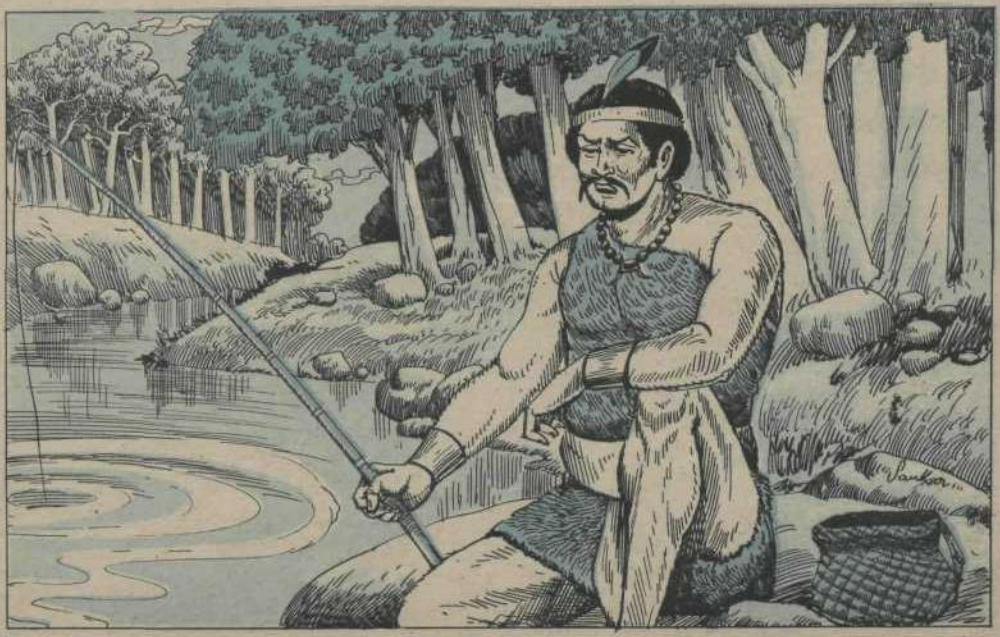

से एक बड़ी मछली फँसा लूंगा और अच्छे ढंग से पकाकर मजे से खा लूंगा।" यह सोचकर उसने अपनी नाभि में से काँटा निकाला और पानी में डाल दिया।

थोड़ी देर में उस काँटे में एक सफ़ेद बड़ी मछली फँस गयी। मल्ल उसे लेकर घर पहुँचा तो देखता क्या है, उसकी औरत घर पर नहीं है। इस बीच उसने मछली को छुरी से काट डाला, उसकी आँखें चमक उठीं और वह चिल्ला उठा– "अंगूठी है, यह राजा की अंगूठी है।"

मल्ल अंगूठी लेकर राजा से मिलने दौड़ पड़ा, रास्ते में जो भी मिला, उससे कहता गया–"मैंने सोचा था कि मेरी आयु समाप्त हो गयी है, लेकिन मैं बच गया हूँ।" जब वह राजा के पास पहुँचा, तब उसके पीछे एक भीड़ भी आ पहुँची।

राजा ने अपने नौकरों से पूछा–"बाहर यह कैसा हो हल्ला हो रहा है?"

उसी समय मल्ल अपने दोस्तों के साथ भीतर आया और राजा से बोला– "महाराज, लीजिये यह अंगूठी! अब मेरी मौत की सज़ा रद्द कीजिये।"

सब के समक्ष राजा को मल्ल की मौत की सजा रद्द करनी पड़ी। राजा यह सोच नहीं पाया कि वह अंगूठी मल्ल के हाथ कैसे लगी? कौन-सी मायावी शक्तियाँ उसे मदद दे रहीं हैं, उस दिन से फिर राजा ने कभी मल्ल का अपकार करने का प्रयत्न नहीं किया।

वास्तव में बात यों हुई। मल्ल की औरत ने जब वह अंगूठी ला दी, तब राजा ने उसे अपने सरहाने के पास रखी तिपाई पर रख दी, उस रात को एक चूहे ने तिपाई पर से उछलते हुए उसे पानी के घड़े में गिरा दिया। दूसरे दिन रोज की भांति राजा के नौकर ने घड़े के पानी को नाले में गिरा दिया और ताज़ा पानी भरकर ले गया। राजा को यह बात मालूम न थी, इसलिए वह कल्पना तक न कर सका कि उसकी अंगूठी फिर से मल्ल के हाथ कैसे पड़ गयी?

फरक!

एक गाँव में माधव नामक एक जमींदार था। वह दूसरों के सुख-दुखों की चिंता नहीं करता था। उसका यदि कोई स्वार्थ होता तो उस काम में वह दखल देता था।

उसी गाँव में गोविंद नामक एक गरीब युवक था। वह यथाशक्ति सबका उपकार करता था, समय पर सबकी सहायता करता था। बदले में वह किसी से कुछ लेता न था। इसलिए गाँववाले मौक़ा देख उसकी जरूरत की पूर्ति कर देते थे।

एक बार गोविंद किसी काम से दूर के एक गाँव में गया। वह कई दिन तक नहीं लौटा, इसलिए लोग ऐसा अनुभव करने लगे मानो उनका दाया हाथ टूट गया हो, सब बड़ी परेशानी का अनुभव करते यह कहने लगे–"न मालूम गोविंद कब लौटनेवाला है! उस पर क्या बीता हो।" ये बातें सुन माधव अचरज में आ गया।

माधव की पत्नी ने भी अनेक बार यह कहा–"गोविंद जो चला गया लौट कर नहीं आया।"

एक कौड़ी का मूल्य न रखनेवाले गोविंद के बारे में लोगों की यह परेशानी देख माधव ने सोचा कि उसके जैसे धनी के बारे में न मालूम लोग क्या क्या सोचेंगे। यह सोचकर वह पड़ोसी गाँव में गया और दो सप्ताह बाद लौट आया।

जमीन्दार यह सोचते गाँव लौटने लगा कि लोग उसके लिए परेशान होंगे। उसकी अनुपस्थिति के बारे में तरह तरह की कहानियाँ सुनायेंगे, तभी उसके गांव में प्रवेश करते समय सोम नामक एक किसान सामने आया।

"सोम! गाँव का क्या समाचार है?" माधव ने पूछा।

"क्या है जी? कल ही गोविंद लौट आया है, आप भी तो जानते होंगे?" सोम ने जवाब दिया।

"मैं दो सप्ताह से गाँव में नहीं था।" माधव ने कहा।

"ओह, ऐसी बात है! किसीने यह बात तक नहीं कही?" सोम ने कहा।

उत्तमम् स्वार्जितम् वित्तम्,
मध्यमम् पितुरार्जितम्,
अधमम् भ्रातृवित्तंच,
स्त्री वित्त मधमाधमम् ॥ १ ॥

[स्वयं कमाया हुआ धन उत्तम है, पिता के द्वारा अर्जित संपत्ति मध्यम है, भाइयों का धन अधम है, नारी का धन अधमाधम है ।]

उत्तमम् कुल विद्याया,
मध्यमम् कृषि वाणिजात्,
अधमम् सेवकावृत्तेः,
मृत्यु श्चौर्योपजीवनात् ॥ २ ॥

[कुल की विद्या उत्तम है, खेती तथा व्यापार मध्यम है, सेवकावृति अधम है, किंतु चोरी करके जीना मृत्यु के समान है ।]

उत्तमे क्षणकोपस्यात्.
मध्यमे घटिकाद्वयम्,
अधमे स्या दहोरात्रम्,
पापिष्ठे मरणांतकम् ॥ ३ ॥

[उत्तम व्यक्ति का क्रोध दो घड़ियों तक होता है । अधम व्यक्ति का एक दिन और एक रात होता है, किंतु पापी का क्रोध जीवन पर्यंत होता है ।]

उत्तमम्–मध्यम्–अधमम्

भूत पर्वत

[७]

[मांत्रिक तथा जटाधारी भूत का पीछा करते खड्गवर्मा और जीवदत्त गुफा में पहुँचे, थोड़ी देर तक खोज करने पर उन्हें एक गुप्त द्वार दिखाई दिया। उससे होकर आगे बढ़े और एक शिथिल भवन के निकट पहुँचे। वहाँ पर एक आसान पर बैठी हुई पुजारिणी ने खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को बन्दी बनाने का मांत्रिक को आदेश दिया। बाद]

अपने सामने स्थित शिथिल भवनों की ओर एकटक देखते हुए जीवदत्त सोचने लगा कि ये भवन किस जमाने में निर्मित हैं और किस कारण से ये जन-विहीन हो इस प्रकार शिथिलावस्था में नज़र आ रहे हैं। पर खड्गवर्मा यही सोच रहा था कि जहाँ तक हो सके शीघ्र ही मांत्रिक तथा जटाधारी भूत को पकड़ कर उनका वध किया जाय।

एक-दो मिनट तक खड्गवर्मा तथा जीवदत्त अपने अपने विचारों में मग्न हो मौन रहें, तभी उनके निकट की दीवार से किसी भारी चीज़ के टकराने की सी आवाज़ हुई।

उस आवाज़ को सुनते ही खड्गवर्मा झट उठ खड़ा हुआ और बोला–"जीवदत्त! यह कैसी आवाज़ है? वे दोनों दुष्ट हम पर छिपकर हमला करने की कोशिश तो

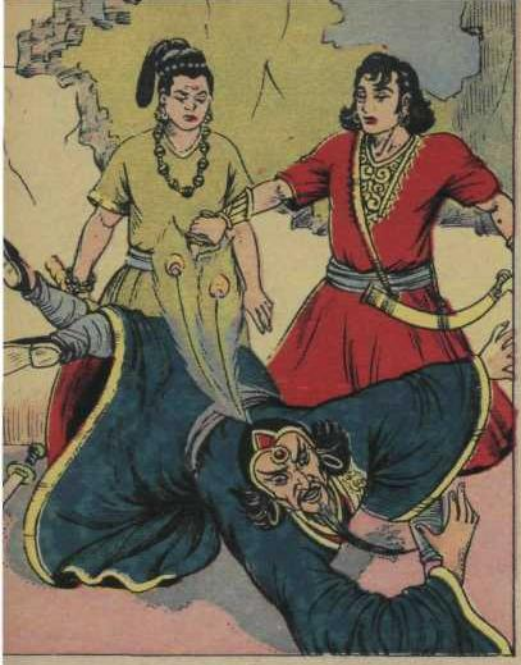

नहीं कर रहे हैं? तुम चौकन्ने होकर आगे का उपाय सोचो! पर ख्याल रखो कि जल्दबाजी में आकर हमें इनके हाथों में फँसना नहीं चाहिए।"

"यह मत सोचो कि वह मांत्रिक और जटाधारी दिन दहाड़े हम पर हमला करने की हिम्मत कर सकेंगे! फिर भी हमें तो सतर्क रहना चाहिये।" इन शब्दों के साथ जीवदत्त भी उठा और दीवार के निकट जा पहुँचा।

खड्गवर्मा तथा जीवदत्त शिथिलावस्था में स्थित उस पत्थर की दीवार के समीप जाकर उस पार देखने का प्रयत्न कर ही रहे थे कि मांत्रिक उछल कर दीवार पर आ खड़ा हुआ और चिल्ला उठा–"अरे नर मानव! तुम दोनों की अभी मैं महाभूत की बलि देता हूं।" ये शब्द कहते उसने जीवदत्त के कंठ पर निशाना करके एक तलवार फेंका।

खड्गवर्मा ने हठात् अपनी तलवार से मांत्रिक की तलवार को काटते हुए कहा–"अरे कमबख्त मांत्रिक! तुमने हमारी बलि देनी चाही तो पहले ही कर देते, बकते क्यों हो? अभी तुम अपनी जान बचाने के लिए तैयार हो जाओ। तुम्हारी इस दुष्टता का अभी मजा चखाता हूं।" इसके बाद खड्गवर्मा ने मांत्रिक का हाथ पकड़कर ज़ोर से खींचा, मांत्रिक हिल उठा और धम्म से दीवार पर से नीचे जा गिरा।

ठीक उसी समय दीवार के उस पार से कई कंठ एक साथ सुनायी दिये–"अरे पागल मांत्रिक! उन्हें मत मारो। पुजारिणी ने उन्हें जान से पकड़ लाने को नहीं बताया था!"

इस बीच "बलि! बलि!" चिल्लाते जटाधारी भूत बंदर की भांति दीवार पर उछल कर खड़ा हो गया। उसे अपने गुरु की बुरी हालत का पता न था।

जटाधारी भूत ने दीवार पर से झाँककर देखा कि उसका गुरु नीचे धूल चाट रहा है।

इस पर वह चिल्ला पड़ा, तभी जीवदत्त ने उसका पैर पकड़कर ज़ोर से खींचा, वह नीचे गिरने ही जा रहा था, उस वक़्त भूत की कमर पर ज़ोर से एक लात मारी और कहा–"खड्गवर्मा, यहाँ पर ज़्यादा देर ठहरना हमारे लिए खैरियत नहीं है। यह सारा प्रदेश लगता है कि मांत्रिकों का बिल है! हम तुरंत उन महलों में जाकर बचने की कोशिश करेंगे। जल्दी करो।"

इसके तुरंत बाद वे दोनों शिथिल भवन की ओर दौड़ पड़े। एक कमरे के द्वार पर खड़े हो उन दोनों ने मुड़ कर देखा, कहीं वे लोग दीवार लांघ कर उनकी ओर तो नहीं आ रहे हैं! मगर उन्हें सिवाय मांत्रिक तथा जटाधारी भूत के कोई दिखाई न दिया।

"दीवार के उस पार से जो चेतावनी हुई थी, क्या तुमने उसे नहीं सुनी?" खड्गवर्मा ने पूछा।

"इसमें आश्चर्य करने की कौन-सी बात है? उनकी चेतावनी से मुझे यह मालूम हो गया कि शिथिल भवनों में रहनेवाली पुजारिणी ने अपने अनुचरों को आदेश दे रखा है कि वे हम दोनों को प्राणों के साथ बन्दी बनावे। अब हमें सावधान होकर उसी पुजारिणी को पकड़ने का प्रयत्न करना चाहिये, बेचारे इन नौकरों को तंग करने से हमें फ़ायदा ही क्या? ये तो भाड़े के टट्टू हैं!" जीवदत्त ने हंसते हुए उत्तर दिया।

इसके बाद दो-चार मिनट तक वे दोनों सांस रोके खड़े रह गये कि दुश्मन किस ओर से उन पर हमला करेगा, यह जान ले। मगर उन्हें कहीं दुश्मन का पता न चला। जटाधारी भूत तथा मांत्रिक उस टूटी हुई दीवार के पास बैठे कराह रहे थे। इस कराहट को छोड़ उन्हें कोई ध्वनि सुनायी नहीं दे रही थी।

खड्गवर्मा ने द्वार की ओर एक बार ध्यान से देखा और कहा–"जीवदत्त! इस भारी लकड़ी के किवाड़ को देखते हो न? इन किवाड़ों के पीछे उन महलों में जाने का कोई मार्ग अवश्य होगा! क्या हम इन्हें खोलकर देख लें?"

"और हमें करना ही क्या है! हम यहाँ पर इस तरह कितनी देर खड़े रह जायेंगे! उन मांत्रिक-भूतों को उनकी क़िस्मत पर छोड़कर हम अन्य लोगों की खबर लेंगे। पर ख़्याल रखो, हमें बड़ी सावधानी से किवाड़ों को खोलना है। शायद वे दुष्ट किवाड़ों के पीछे हमारी ताक में छिपे बैठे हो, क्या पता?" जीवदत्त ने कहा।

तब खड्गवर्मा ने एक हाथ में तलवार लिये दूसरे हाथ से किवाड़ों को ज़ोर से ढकेल दिया। 'किर्र' आवाज़ के साथ किवाड़ तो हिले, पर वे खुले नहीं।

"हमें इस बात का संदेह क्यों नहीं हुआ कि भीतर किवाड़ों पर सांकल चढ़ाया गया हो।" ये शब्द कहते जीवदत्त ने अपने दोनों हाथों से किवाड़ों को ढकेल दिया। तब जाकर किवाड़ भारी आवाज़ के साथ खुल गये।

खड्गवर्मा तथा जीवदत्त देहली पार कर भीतर गये। वह एक विशाल कक्ष था। उसमें मनुष्यों के निवास करने के कोई लक्षण दिखाई नहीं दिये। कक्ष के चारों कोनों में बड़े-बड़े जाले तथा दीवारों पर लटकते चमगादड़ दिखाई दिये। उस कक्ष के आखिर में टूटे किवाड़ एक ओर झुके हुए थे।

"अब देरी ही क्यों करें? हम जब भीतर आ गये तो सारे कमरों को खोज डालेंगे। कहीं मांत्रिकों की सरदारनी पुजारिणी दिखाई दे।" जीवदत्त ने कहा।

दोनों बड़े ही चौकन्ने हो दूसरे कमरे में पहुँचे। वह कमरा पहले कमरे से ज्यादा भयंकर था। उन्हें देखते ही चार-पांच मोटे-ताजे चूहे 'बौक' 'बौक' चिल्लाते कमरे में इधर-उधर दौड़ने लगे। बाज के बराबर का एक उल्लू ऊपर से तीर की भांति उड़कर आया और एक चूहे को उठाकर एक खिड़की में से बाहर उड़ गया।

"वाह, ये कैसे चूहे और कैसे उल्लू हैं? ये सब अपनी साधारण आकृति से दो-तीन गुने ज्यादा मोटे लगते हैं। आखिर ये कौन सा आहार खाकर इतने मोटे हो गये हैं?" खड्गवर्मा ने पूछा।

"शायद पुजारिणी जब-तब अपने मोटे-ताजे शिष्यों को आहार के रूप में फेंक देती हो!" ये शब्द कहते जीवदत्त हँस पड़ा और बोला–"ऊँ! चलो, न मालूम आगे हमें और क्या क्या विचित्र बातें देखनी है!"

इस प्रकार खड्गवर्मा तथा जीवदत्त कुछ और कमरों को पार कर गये। कुछ कमरों की सीढ़ियाँ चढ़कर उन दोनों ने आगे की ओर देखा, पर उन्हें मनुष्यों के निवास के कोई चिह्न नज़र नहीं आये।

"खड्गवर्मा! ये कमबख्त मांत्रिक पुजारिणी की आज्ञाओं का पालन बड़ी

खूबी के साथ करते मालूम होते हैं। मेरा संदेह है कि ये लोग हमारा पीछा करते आ रहे हैं। उस पुजारिणी ने हमें प्राणों के साथ पकड़ लाने को कहा है न! हमें बिलकुल यह मालूम नहीं होता कि हम किस महल में प्रवेश करके अब कहाँ पहुँच गये हैं?" जीवदत्त ने कहा।

"क्या हम वापस लौट जाये?" खड्गवर्मा ने पूछा।

"और कर ही क्या सकेंगे? इन शिथिल महलों में से पुनः प्रकाश में जाना है तो हमारे लिए गुफा का मार्ग ही एक मात्र सहारा है। देखें, वहाँ तक पहुँच सकेंगे कि नहीं।" जीवदत्त ने सुझाया।

"हम जिस रास्ते से आये हैं, उसे भूल गये हैं। किसी न किसी तरह बाहर जाकर हम उन घायल जटाधारी भूत तथा मांत्रिक को पीटेंगे और उनके द्वारा पुजारिणी का समाचार जान लेंगे।" खड्गवर्मा ने कहा।

इसके बाद वे दोनों जिस कमरे से आये थे, उस ओर चार ही क़दम बढ़ा पाये थे कि हठात् उनके सरों पर मजबूत लाठियों का प्रहार हुआ, फिर क्या था, उन दोनों की आँखें पथरा गयीं और वे बेहोश होकर गिर पड़े। तुरंत पुजारिणी के चार शिष्यों ने आगे बढ़कर बड़ी आतुरता के साथ उनके सरों की परीक्षा की, पर उनके सरों से खून की एक भी बूँद नहीं गिरी थी।

"हमारी क़िस्मत बली है। मैंने सोचा था कि इनके सर फूट गये हैं। यदि ये मर जाते तो महाशक्ति पुजारिणी के हाथों में हम लोग मारे जाते।' उनमें से एक ने कहा।

'"इनके मरने से बचाने के लिए ही तो हमने लाठियों पर मुलायम कंबल के चीथड़ों को लपेट दिया है। उनके हाथ-पैर बांध कर कंधों पर डाल लो। इन्हें पुजारिणी के पास ले जायेंगे।" एक और शिष्य ने कहा।

बेहोश पड़े हुए खड्गवर्मा तथा चीवदत्त के हाथ-पैर बाँध कर कंधों पर डाल अनेक अंधेरे कमरों को पार करते हुए एक विशाल मण्डम के पास ले गये।

मण्डप के बीच मुलायम कालीन बिछाये गये ये, एक ऊँचे आसन पर पुजारिणी बैठी हुई थी। थोड़ा सा हट कर हाथ बांधे कुछ सेवक खड़े हुये थे। पुजारिणी ने एक बार खड्गवर्मा तथा जीवदत्त की ओर कनखियों से देखा, तब आश्चर्य चकित हो बोल उठी–"अरे महाभूत! इनमें से एक मांत्रिक जैसा मालूम होता है?"

"हाँ, हो सकता है, महाशक्ति पुजारिणीजी, उसके हाथ में एक दण्ड भी था। दूसरे के पास एक लंबी तलवार थी।" एक सेवक ने कहा।

"कहाँ पर हैं वे चीजें? कहीं फेंक तो नहीं आये?" पुजारिणी ने पूछा।

"जहाँ पर इन लोगों को बन्दी बनाया, वहीं पर छोड़ आये हैं!" एक सेवक ने कहा।

"जाओ, उन्हें लेते आओ! तुम लोगों के दिमाग में गोवर भरा हुआ है।" पुजारिणी ने आँखें लाल करके कहा।

पुजारिणी का आदेश पाकर दो सेवक उसी वक़्त दौड़कर चले गये और चन्द मिनटों में दण्ड तथा तलवार लाकर

पुचारिणी के सामने रखा। पुजारिणी ने थोड़ी देर तक बड़ी सावधानी से उनकी जांच की और कहा–"लगता है कि इनमें कोई विशेष शक्तियाँ नहीं हैं। इन दोनों को एक कमरे में डाल कर इन चीजों को उनके पास छोड़ आओ। फिर देख लेंगे, क्या होनेवाला है।"

तुरंत पुजारिणी के चार सेवकों ने बेहोशी हालत में स्थित खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को कंधों पर ले जाकर एक अंधेरे कमरे में डाल दिया और बाहर से अर्गला चढ़ा दी।

आध घंटे बाद जीवदत्त होश में आया, उसने खड्गवर्मा को जगा कर कहा–

"मित्र! आश्चर्य की बात है कि अब भी हम दोनों ज़िंदा हैं। हमारे आयुध भी हमारे पास ही हैं।"

खड्गवर्मा ने कमरे के चारों ओर एक बार अवलोकन किया और कहा– "हमें इस प्रकार प्राणों के साथ छोड़ देने में पुजारिणी की कोई चाल होगी।"

"उस पुजारिणी को देखे बिना उसकी चाल का पता लगना कठिन है। हमें पहले यहाँ से भाग जाना होगा।" ये शब्द कहते जीवदत्त उठ खड़ा हुआ।

"उन दुष्टों ने ताक में छिपे रहकर हम पर हमला कर दिया। यदि वे हमारे हाथों में पड़े गये होते तो प्राणों..."

खड्गवर्मा की बातें पूरी भी न हो पायी थीं कि दीवार के उस पार से सिंह के गरजने की आवाज़ सुनायी दी। तब खड्गावर्मा ने हंसकर उछलते हुए कहा–"क्या वे दुष्ट हम पर सिंह को उकसाना चाहते हैं?"

"यह भी एक प्रकार से हमारे लिए अच्छा ही होगा। इस सिंह का प्रयोग हम उन्हीं लोगों पर करके इस प्रदेश को हम बीभत्स बना डालेंगे।" ये शब्द कहते जीवदत्त ने अपने दण्ड से दीवार पर प्रहार किया। दीवार का थोड़ा हिस्सा भयंकर ध्वनि के साथ टूट कर नीचे गिरा। बगल के कमरे में स्थित सिंह भड़क उठा और वह गरजते हुए दीवार से सटकर खड़ा हो गया।

"हे सिंहराज, तुम्हें आजादी के साथ आहार भी मिलने जा रहा है।" इन शब्दों के साथ जीवदत्त ने अपने कमरे के किवाड़ों को दण्ड से दे मारा। किवाड़ टूट कर नीचे जा गिरे।

दूसरे ही क्षण दस-बारह पुजारिणी के सेवक यह चिल्लाते आगे आये–"बन्दी भागते जा रहे हैं, पकड़ लो।" तुरंत जीवदत्त सिंह की ओर दौड़ पड़ा और उसे पुजारिणी के सेवकों की ओर दण्ड से हाँक दिया। सिंह गर्जन करते उन पर टूट पड़ा।

(और है)

राक्षस-विवाह

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, तुम न मालूम किस की बात पर यक़ीन करके अर्ध रात्रि के समय इस प्रकार श्रम उठा रहे हो, पर याद रखो कि सिंहपुरी के राजा विजयवसंत की भांति अपने वचन से मुकरनेवाले भी होते हैं। श्रम को भुलाने के लिए मैं तुम्हें उसकी कहानी सुनाता हूँ, सुनो।"

बेताल यों कहने लगा : विजयवसंत असाधारण शक्तिशाली तथा पराक्रमी था। युद्ध-विद्या में उसकी समता कर सकनेवाला व्यक्ति कोई न था। उसके अरुणकुमारी नामक एक पुत्री थी। उसके सौंदर्य की प्रशंसा उसके पिता के पराक्रम की तरह चतुर्दिक व्याप्त हो गयी थी।

अरुणकुमारी युक्त वयस्का हो गयी। राजदरबार में जब उस कन्या के विवाह की चर्चा चल पड़ी, तब राजा ने सब के सुझावों को काटकर यह घोषणा की– "युद्ध-विद्या में जो राजकुमार मुझ से अधिक प्रवीण साबित होगा, उसके साथ मैं अपनी कन्या का विवाह करूँगा।"

इस घोषणा को आधार बनाकर मंत्रियों ने अरुणकुमारी के स्वयंवर का प्रबंध किया और यह घोषणा भी करवायी कि समस्त युद्ध-विद्याओं में राजा के साथ स्पर्धा करके जो राजकुमार विजयी होगा, उसी के साथ राजकुमारी का विवाह किया जायगा। यह घोषणा सभी देशों में करायी गयी, परंतु शाकलपुरी में नहीं करायी गयी, क्योंकि सिंहपुरी तथा शाकलपुरी के बीच गहरी शत्रुता थी।

मगर शाकलपुरी का राजकुमार कमलशेखर बहुत समय से अरुणकुमारी के साथ विवाह करना चाहता था। एक दूसरे देश के राजकुमार के द्वारा उसे अरुणकुमारी के स्वयंवर का समाचार मिला। तब कमलशेखर उस राजकुमार के साथ मित्र के रूप में स्वयंवर में भाग लेने चल पड़ा।

स्वयंवर के दिन अन्य राजकुमारों के साथ कमलशेखर ने भी घोड़े की सवारी, गदायुद्ध तथा धनुर्विद्या में भाग लेकर सबको हराया।

अरुणकुमारी कमलशेखर के कंठ में वरमाला डालने ही वाली थी, उस वक़्त विजयवसंत ने कमलशेखर के साथ आलिंगन करके पूछा–"कुमार, मैं तुम्हारी प्रवीणता पर मुग्ध हो गया हूँ। तुम किस देश के राजकुमार हो? तुम्हारा क्या नाम है?"

"मैं शाकलपुरी का राजकुमार हूँ। मेरा नाम कमलशेखर है।" कमलशेखर ने जवाब दिया।

राजा विजयवसंत क्रोध में आकर गरज उठा–"दुष्ट! तुरंत तुम यहाँ से चले जाओ। इस बार तुम्हें मैं प्राणों के साथ छोड़ देता हूँ।"

कमलशेखर का भी क्रोध भड़क उठा। उसी स्वर में वह भी बोला–"तुम ने जो स्पर्धा रखी, उसमें जब मैं सफल निकला तभी तुम्हारी पुत्री मेरी वधू बन गयी है। मैं भी देखूंगा कि उसके साथ विवाह किये बिना तुम मुझे कैसे रोकोगे?" इन शब्दो के साथ कमलशेखर ने म्यान से तलवार निकाली।

विजयवसंत ने भी तलवार खींची। दोनों के बीच घनघोर युद्ध हुआ। उस युद्ध में विजयवसंत के हाथ में गहरी चोट लगी।

फिर क्या था, तत्काल कमलशेखर अरुणकुमारी का हाथ पकड़कर अपने घोड़े पर बिठाकर अपने देश की ओर भाग खड़ा हुआ। उसी दिन विजयवसंत ने युद्ध-भेरी बजायी। अपनी भारी सेना को लेकर शाकलपुरी पर हमला बोल दिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल शाकलपुरी की सेना युद्ध के लिए तैयार होकर आ पहुँची। सेना के अग्रभाग मे कमलशेखर के साथ अरुणकुमारी भी थी।

अपनी पुत्री को देखते ही विजयवसत ने युद्ध रोक दिया। अपनी पुत्री तथा जामातो का आलिंगन कर उन्हें आशीर्वाद दिया। उनके साथ शाकलपुरी में प्रवेश करके अपने जानी दुश्मन शाकलपुरी के राजा के साथ मैत्री की। अपनी पुत्री का विवाह वैभव के साथ संपन्न कर वह अपने देश को लौट आया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा– "राजन, राजा विजयवसंत के इस व्यवहार का क्या मतलब है? उसने जो शर्त रखी थी, उसके मुताबिक़ समस्त युद्ध-विद्यायों में विजयी हुए कमलशेखर के साथ अपनी पुत्री का विवाह करने से इनकार किया और खड्ग युद्ध में उसे मार डालने का क्यों प्रयत्न किया? इसके बाद उसके साथ युद्ध करने के लिये भारी सेना ले जाकर हमला किया, पर युद्ध किये बिना स्वयं उनका विवाह क्यों कराया? इस संदेह का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा–"अरुण-कुमारी के स्वयंवर में कमलशेखर को निमंत्रण नहीं दिया गया था। इसलिये युद्ध-विद्याओं में भाग लेने का उसे कोई अधिकार नहीं है। कमलशेखर राजा विजयवसंत का शत्रु था। तब भी उसे प्राणों के साथ छोड़ने के लिए वह तैयार हो गया, किंतु कमलशेखर ने ही उस पर पहले तलवार खींच ली। अपने प्राण लेनेवाले को मारने का प्रयत्न करना अपराध नहीं है। विजयवसंत का युद्ध करने जाना भी उचित ही है। उसने अपनी पुत्री के स्वयंवर का प्रबंध किया तो वह राक्षस-विवाह के रूप में परिवर्तित हुआ। इसलिए विजयवसंत ने अपनी पुत्री को छुड़ा लाने के लिए युद्ध का प्रबंध किया। मगर अपने साथ युद्ध करने के लिए अपनी पुत्री को स्वयं आये हुए देख उसे यह बात स्पष्ट प्रतीत हो गयी कि वह उसे उठा ले जानेवाले के साथ इच्छा पूर्वक विवाह करना चाहती है। राक्षस-विवाह धर्म के विरुद्ध नहीं है। इसलिए विजयवसंत ने प्रसन्नता के साथ इसे मान लिया और अपने दामाद के साथ शत्रुता को चालू रखना उचित न मानकर उसके परिवार के साथ मैत्री स्थापित की।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

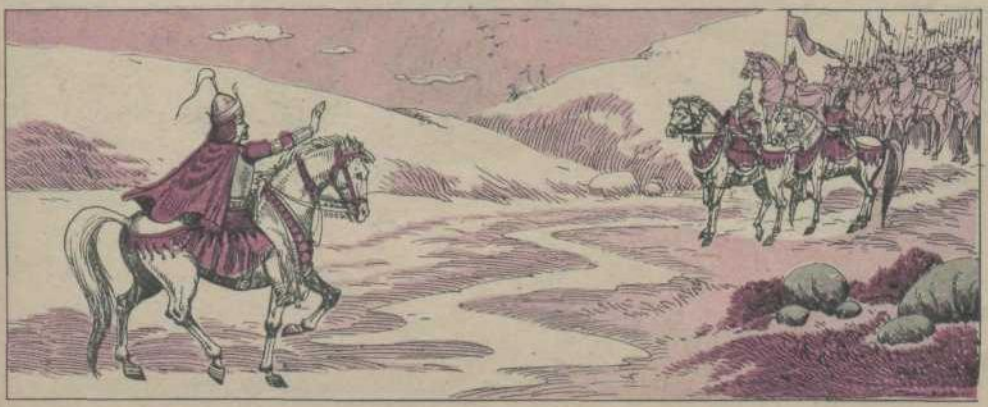

तीन मूर्ख

चन्द्रावती नामक नदी के किनारे शिवपुर नामक एक गाँव था। उस गाँव के मंदमति बहुत ही प्रसिद्ध थे। शिवपुर के लोगों को हाट में जाने के लिए चन्द्रावती नदी को पार करना पड़ता था। नदी पर निर्मित पुल पर एक दिन दो ग्रामीण मिले।

एक ने दूसरे से पूछा–"तुम कहाँ जाते हो? क्यों जाते हो?"

"हाट में भेड़ खरीदने जा रहा हूँ।" दूसरे ने जवाब दिया।

"किस रास्ते से लौटोगे?" पहले ने फिर पूछा।

"इसी पुल पर से!" दूसरे ने जवाब दिया।

"मैं तुम्हें आने दूँ, तब न?" ये शब्द कहते पहले ने झूठ-मूठ भेड़ों को तितर-बितर करने का अभिनय किया। तुरंत दूसरा व्यक्ति झूठ-मूठ भेड़ों को लौटने का यत्न करने लगा।

वे दोनों मूर्ख झूठ-मूठ भेड़ों को तितर-बितर करने व उन्हें लौटाने का अभिनय कर ही रहे थे कि तभी तीसरा आदमी सर पर दूध का घड़ा ले आ पहुँचा। उसकी समझ में सारी बात आ गयी। उसने अपने घड़े के दूध नदी में गिरा कर पूछा–"अब बताओ, इस घड़े में कितना दूध है?"

"कुछ नहीं।" दोनों मूर्खों ने जवाब दिया।

"तुम दोनों के दिमाग में गोबर भरा हुआ है।" तीसरे ने कहा।

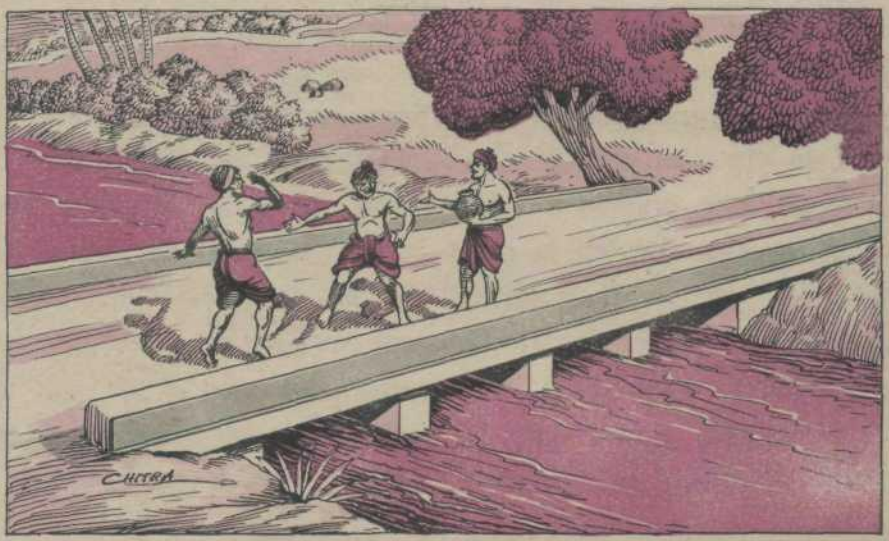

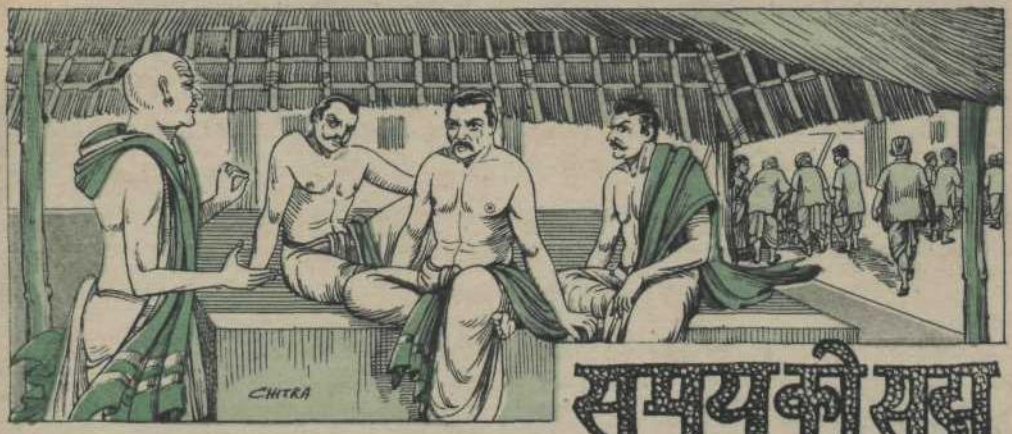

समय को मूल्य

एक गाँव में भद्रसेन नामक एक नामी ज्योतिषी था, आसपास के सभी गाँववालों ने उसके पास अपना हाथ दिखाया था। वह किसी का भी हाथ देख उसके मन की बात बता देता, साथ ही उसके भूत और भविष्य की बातें भी स्पष्ट बतला देता था।

भद्रसेन का यश दूर तक फैल गया था, इसलिए कोई पेशेवर ज्योतिषी उस गाँव में जाने से डरता था। यदि भूल से कोई ज्योतिषी उस गाँव में आ जाता तो भद्रसेन उसकी परीक्षा लेकर गाँववालो के सामने उसका अपमान करके लौटा देता था।

एक बार उस गाँव में रामशास्त्री नामक एक ज्योतिषी आया जो भद्रसेन के बारे में बिलकुल नहीं जानता था।

भद्रसेन को जब मालूम हुआ कि रामशास्त्री भी ज्योतिष का ज्ञान रखता है तब उसने रामशास्त्री से एक साथ कई सवाल किये–"हस्तसामुद्रिक शास्त्र के किन किन भागों का तुमने अध्ययन किया है? असल में तुम किस गाँव के निवासी हो?"

"महाशय, मैं हस्त सामुद्रिक शास्त्र के बारे में बहुत थोड़ी सी जानकारी रखता हूँ। मैं जो कुछ जानता हूँ, वही बताकर अपना पेट पालता हूँ। जहाँ मेरा पेट भर सके, वही मेरा गाँव है।" रामशास्त्री ने विनयपूर्वक उत्तर दिया।

रामशास्त्री की विनयशीलता देख भद्रसेन तैश में आ गया और बोला–"तुम्हारा अधकचरा ज्ञान देख इस गाँव के लोग पैसे दे सकनेवाले पागल नहीं हैं, तुमने शायद मेरे बारे में सुना नही होगा। हस्तसामुद्रिक शास्त्र में मै अपना सानी नहीं रखता। मेरे रहते तुम्हें इस गाँव में कोई पानी तक न देगा। इसलिए तुम

विमलेश

किसी और गाँव में चले जाओ, इसी में तुम्हारा भला होगा।"

ये बातें सुनने पर रामशास्त्री को बड़ा क्रोध आया। उसने निश्चय कर लिया कि भद्रसेन का घमण्ड तोड़ कर ही इस गाँव से बाहर जाना है। उसने शांत स्वर में कहा–"महाशय, सबका ज्ञान अपनी अलग विशेषता रखता है। मैं डींग नहीं मारता कि मैं आपसे बड़ा विद्वान हूँ। मगर आपने बिना किसी प्रकार के सबूत के मुझे तुच्छ ठहराया। बड़े-छोटे का निर्णय परीक्षा के द्वारा ही संभव है।"

वहाँ पर इकट्ठे हुए लोगों ने कहा–"रामशास्त्री का कहना सही है। दोनों से अपरिचित किसी अजनबी का हाथ देख उसका हाल बता दीजिये, तब मालूम होगा कि किसका कहना सही है।"

वे लोग इस प्रकार बात कर ही रहे थे कि तभी उधर से पड़ोसी गाँव का एक धनी व्यक्ति आ पहुँचा। चौपाल के पास जमा हुए लोगों ने उसको बुलाकर समझाया–"महाशय, यहाँ पर एक छोटी सी परीक्षा होनेवाली है। आप कृपया इन दोनों ज्योतिषियों को अपना हाथ दिखाके जाइये।"

धनी व्यक्ति ने चौपाल के निकट पहुँच कर अपना हाथ बढ़ाया। भद्रसेन ने उसके

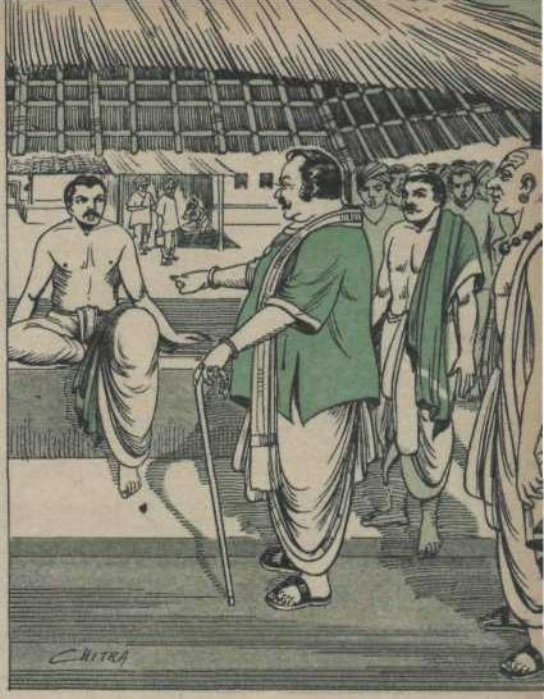

हाथ की रेखाएँ देखकर कहा–"महाशय, यहाँ तो परीक्षा हो रही है। इसलिए मैं सच्ची बात बता देता हूँ। आप के पास संपत्ति तो काफ़ी पड़ी हुई है, मगर आप कंजूस भी कम नहीं हैं। आप अपनी पत्नी की उंगलियों के इशारे पर चलते हैं।"

धनी आदमी ने क्रोध में आकर पूछा–"क्या झूठमूठ बककर मेरा अपमान करने के लिए ही मुझे यहाँ पर बुलाया है?"

इस पर रामशास्त्री ने उस अजनबी से कहा–"महाशय, नाराज़ मत होइयेगा। कुछ लोग यही सोचते हैं कि वे ही ज्योतिष

शास्त्र के पूर्ण पंडित हैं। आपका हाथ मुझे भी देख लेने दीजिये। ...यह हाथ तो लक्ष्मी पुत्र का है। इस हाथ की रेखाएँ उदारता को सूचित करती हैं। बड़े से बड़े व्यक्ति भी इसके सामने भीगी बिल्ली बन जाते हैं। इनके पूर्वजन्म के पुण्य के फलस्वरूप इनको बड़ी ही अनुकूलवती पत्नी प्राप्त हो गयी है।"

ये बातें सुनकर धनी व्यक्ति एक दम और ख़ुशी में आकर बोला–"शहबाश! आपने सारी बातें सच्ची सच्ची ऐसे बता दीं, मानों निकट से मुझे देखा हो।"

इसके बाद रामशास्त्री ने धनी की हथेली को ध्यान के साथ देखकर कहा–"इस वक़्त आप मेरे शास्त्र ज्ञान पर प्रसन्न हो कर मुझे अपने हाथ की अंगूठी पुरस्कार में देने की सोच रहे हैं।"

यह बात सुनकर धनी व्यक्ति का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। इसे भांप कर रामशास्त्री ने पूछा–"क्या मैं ने गलत बात बतायी? आप ऐसे क्यों देख रहे हैं?"

धनी व्यक्ति ने अपने को संभालते हुए कहा–"ऐसी कोई बात नहीं है। मुझे इस बात का आश्चर्य हो गया कि आप मेरे मन की बात कैसे मालूम हो गयी?"

ये शब्दों कहकर उस धनी व्यक्ति ने अपनी उंगली से क़ीमती अंगूठी निकालकर रामशास्त्री के हाथ दी और अपने रास्ते चलता बना। वहाँ पर उपस्थित लोगों ने अनेक प्रकार से रामशास्त्री की तारीफ़ की और यह स्वीकार किया कि वह परीक्षा में सफल निकला है। ये बातें सुनकर भद्रसेन का सर लज्जा से झुक गया।

तब रामशास्त्री ने उन लोगों से कहा–"वास्तव में भद्रसेन जी हस्त सामुद्रिक शास्त्र में प्रवीण हैं, परंतु इसी को अपना पेशा बनानेवाले मुझ जैसे व्यक्ति के लिए केवल शास्त्रसंबन्धी ज्ञान पर्याप्त नहीं है। साथ ही समय की सूझ भी होनी चाहिये। वास्तविक ज्ञान को न जोड़ा जाय तो अर्थहीन अहंकार बढ़ जाता है। अहंकार के कारण अपमानित होना पड़ता है।"

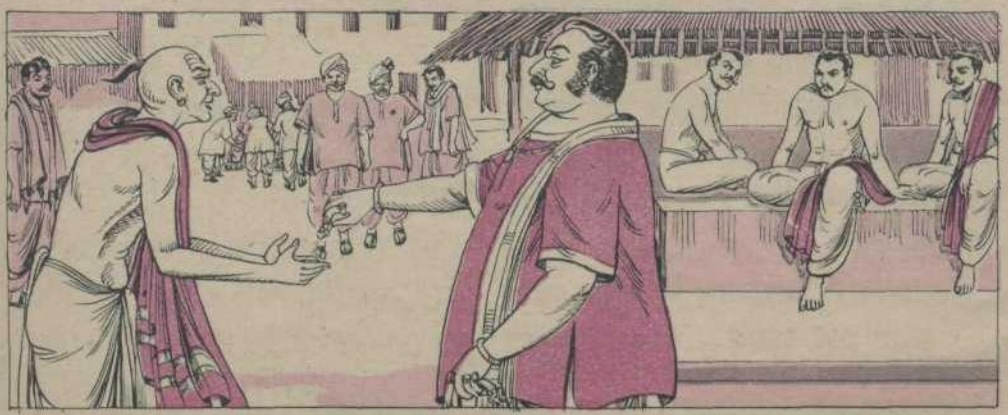

वादे का पक्का

प्राचीन काल में तुर्की देश में अब्दुल हमीद नामक एक सौदागर रहा करता था। उसके पास एक अरबी नस्ल का अनोखा घोड़ा था। सौदागर उस घोड़े को बहुत चाहता था। मगर उसकी उम्र ढल चुकी थी। इसलिए वह घोड़े पर सवारी नहीं कर पाता था। इसलिए उसने उस घोड़े को बेचने का निश्चय कर लिया। वह उस घोड़े को तीन सौ दीनारों में बेचना चाहता था, इस कारण कोई उतनी क़ीमत देकर ख़रीद नहीं पाता था।

एक दिन अजीज नामक एक युवक अब्दुल हमीद के पास आया और झुक कर सलाम करके बोला–"हुजूर, मैं एक ऊँचे खानदान में ज़रूर पैदा हुआ हूँ, मगर इस वक़्त बड़ा गरीब हूँ। आपके घोड़े को मैं बहुत चाहता हूँ, लेकिन मैं उसका दाम दे नहीं पाता हूँ, आप मेहर्बानी करके वह घोड़ा मुझे दे तो मैं दूसरे देश में जाकर कमाना चाहता हूँ। मैं एक साल के अन्दर लौट आऊँगा, और इस बीच जो भी कमाऊँगा, उसे घोड़े की क़ीमत के रूप में आपको सौंप दूंगा। मैं आपसे वादा करता हूँ कि अपने वादे को मैं नहीं तोड़ूँगा।"

हमीद ने पल भर सोचकर कहा–"अच्छी बात है, तुम अपनी शर्त के मुताबिक़ इस घोड़े को ले जाओ!" इन शब्दों के साथ हमीद ने अजीज के हाथ घोड़ा और चाबुक भी दिया।

अजीज बड़ी ख़ुशी के साथ उस घोड़े पर सवार हो अपनी क़िस्मत की खोज में चल पड़ा।

कुछ दिन सफ़र करके वह एक शहर में पहुँचा। वह राजमहल से होकर जा ही रहा था कि खिड़की के पास खड़े सुलतान की नज़र उस पर पड़ गयी। उसे लगा कि

ममता रावत

अरबी नस्ल का वह घोड़ा उसके पास हो तो क्या ही अच्छा हो।

सुलतान ने अपने नौकरों को अजीज जिस सराय में ठहरा था वहाँ भेजकर उसे बुला भेजा और पूछा–"मैं तुम्हारे घोड़े को खरीदना चाहता हूँ, बताओ, उसकी क़ीमत क्या है?"

अजीज यक़ीनन उस घोड़े को बेचना नहीं चाहता था, मगर सुलतान के खुद बुलाकर मांग करने पर यह कहना वाजिब न होगा कि मैं नहीं बेचूंगा। इसलिए उसने सोचा कि जहाँ तक हो सके, घोड़े के मालिक को ज़्यादा दाम दिलाना मुनासिब होगा, इस ख़्याल से उसने कहा–"हुजूर! इस घोड़े का दाम कम से कम नौ सौ सोने की दीनार है।"

सुलतान को यह क़ीमत भारी मालूम हुई मगर वह घोड़े को छोड़ना नहीं चाहता था। इसलिए उसने अजीज से कहा–"तुम बहुत ज़्यादा दाम बताते हो, मुझ भी आज सोच लेने दो, कल हम इसका दाम ठीक कर लेंगे।" यह कहकर सुलतान ने अजीज को भेज दिया।

अजीज के चले जाने के बाद सुलतान ने अपने वजीरों को बुलाकर पूछा कि घोड़े को कम दाम पर खरीदने की कोई तरक़ीब बता दो, इस पर सबने अपने-अपने ढंग से दाम बताये, मगर उनकी सलाह सुलतान को पसंद नहीं आयी।

इस पर प्रधान वजीर ने कहा–"जहाँपनाह, कल हम जब उस घुड़सवार से बगीचे में मिलेंगे, तब शहजादी को भी सामने रखकर उसके द्वारा भी सौदा कराइये। वह कम दाम में घोड़ा बेच देगा, नहीं बेचा तो वह हमारे राज्य से जायगा ही कहाँ? फिर मैं देख लूंगा कि घोड़ा कैसे खरीदना है!"

यह सलाह सुलतान को अच्छी लगी। उसने वजीर को आदेश दिया कि अजीज को घोड़े के साथ बगीचे में ले आवे। उस दिन सवेरे सुलतान ने अपने से पहले

शहजादी को बगीचे में भेजा। अजीज घोड़े पर सवार हो जब बगीचे में पहुँचा, तब तक शहजादी बगीचे में संगमरमर के बने एक चबूतरे पर अकेली बैठी हुई थी। अजीज उसे बहुत ही ख़ूबसूरत लगा। उसे यह भी लगा कि उस घोड़े पर सवारी करने के लिए अपने बूढ़े बाप की बनिस्बत वही युवक वाजिब है।

शाहजादी ने घोड़े को देखने का अभिनय करते घोड़े के पास जाकर उस युवक से कहा–"तुम अगर इस घोड़े को सस्ते दाम पर न बेचोगे तो तुम्हारी जान के लिए ख़तरा है। इसलिए तुम्हारे भाग जाने के सिवाय कोई दूसरा रास्ता नहीं है। मेरे पास एक कोट है। उसमें कई हज़ार दीनार सिये हुए है। मेरे बाप के यहाँ आते ही तुम पूछो कि तुम्हें प्यास लगी है। मैं भीतर जाकर कोट पहन कर पानी लेते आऊँगी। इसके बाद हम दोनों घोड़े पर सवार हो भाग जायेंगे।"

इतने में सुलतान आ पहुँचा। अजीज ने प्यास का बहाना किया। शहजादी पानी लाने का बहाना बनाकर महल के अन्दर चली गयी। कोट पहन कर पानी के साथ बगीचे में आयी। अजीज ने हाथ बढ़ाकर पानी लेने का अभिनय कर शाहजादी को घोड़े पर बिठाया और वह भी घोड़े पर सवार हो बिजली की भांति गायब हो गया।

सुलतान ने अजीज के पीछे अपने घुड़ सवारों को दौड़ाया। मगर वे अजीज को

पकड़ नहीं पाये। इसके बाद अजीज शहजादी के साथ कई देश घूमे। उनके दिन बड़े आराम से बीते।

अब एक वर्ष पूरा होने को था। आगे की बात का विचार कर वह दुख में डूब गया। शहजादी ने अजीज से दूख का कारण पूछा।

अजीज ने अबदुल हमीद के साथ जो शर्त लगायी थी, उसका परिचय देकर कहा–"मैं ने हमीद के सामने यह शपथ खायी है कि इस घोड़े के जरिये मैं जो भी कमाऊँगा, उसे हमीद को दे दूंगा। उनको देनेवाली चीज़ों में तुम और तुम्हारा कोट भी है। मगर मैं तुमको छोड़कर ज़िंदा नहीं रह सकता।"

शहजादी ने अचरज में आकर कहा–"यह कैसा? तुम ने तो मूझे जीत लिया। तुम पर प्यार होने के कारण मैं अपने सब लोगों को छोड़ तुम्हारे साथ आयी हूँ। हमीद को एक हज़ार दीनार दे दो। वह खुश हो जायगा।"

मगर इस सलाह को अजीज ने नहीं माना। उसने हठ किया कि चाहे उसे जितना भी बड़ा कष्ट उठाना पड़े, वह अपने वादे को पूरा रहेगा।

निश्चित समय पर वे दोनों हमीद के यहाँ पहुँचे।

अजीज ने हमीद को सलाम करके कहा–"मैं कई देश घ्म आया हूँ। आपने मुझे जो घोड़ा दिया, उसके जरिये इस शहजादी को तथा सोने की दीनार सिये हुए इस कोट को भी मैंने कमा लिया। घोड़े के दाम के रूप में आप इन्हें स्वीकार कीजिये।"

अजीज की उदारता देख हमीद के मन में उसके प्रति आदर तथा दया का भाव भी पैदा हुआ। उसने मुस्कुरा कर कहा–"मैं तुम्हारी सचाई पर मुग्ध हूँ। यह कोट मेरे लिए काम देगा। इस में जो सोना है, हम दोनों बराबर बांट लेंगे। घोड़े तथा शहजादी को तुम्हीं रख लो।" इन शब्दों के साथ हमीद ने अजीज तथा शहजादी को दिल खोलकर आशीसें दीं।

अक्लमंद लकड़हारा

[५]

खलीफ़ा यह बात सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ और बोला–"हसन, ऐसी स्वार्थ रहित मित्रता को मैं बहुत ही पसंद करता हूँ। इस पल से तुम को मैं अपने अनुचर के रूप में नियुक्त करता हूं। राजमहल में तुम्हें पूर्ण स्वतंत्रता रहेगी। बिना अनुमति के तुम राजमहल में आ-जा सकते हो। रानी जुबेदा के महल में प्रवेश करने की अनुमति किसी को भी नहीं है, लेकिन तुम को मैं वैसी अमुमति देता हूँ।"

खलीफ़ा ने हसन के लिए राजमहल में ही ठहरने का अच्छा प्रबंध किया। उसे दस हज़ार दीनार तत्काल ही खर्चमद्दे दिला दिया और यह वचन भी दिया कि खलीफ़ा इस बात का ख्याल रखेगा कि उसे किसी तरह की तक़लीफ़ न हो। इस के बाद खलीफ़ा हसन को छोड़ दरबार में चला गया।

अबू अल हसन तुरंत अपने घर दौड़ गया। सारी बातें अपनी माँ को सुनाकर बताया कि खलीफ़ा ने यह सारा नाटक मजाक़ के लिए रचा है। वह अपनी माँ को यह आश्वासन दे राजमहल को लौट आया कि वह रोज़ उसे देखने आया करेगा। तब तक उस की यह विचित्र कहानी सारे देश में फैल गयी। खलीफ़ा हसन के प्रति जो आदर दिखाता था, इस से हसन घमण्डी नहीं हुआ। वह रोज़ अपने हास्य और मजाक़ के द्वारा खलीफ़ा का मनोरंजन करता था। हसन को छोड़ अलग रहना खलीफ़ा को मुश्किल मालूम होने लगा।

खलीफ़ा के साथ जब भी हसन अपने महल में आता तब उस की दृष्टि बेगम की दासी गन्ना पर जमते तथा गन्ना के अपने लाल होते जुबेदा ने भांप लिया था।

उसने एक दिन खलीफ़ा से कहा–"हुजूर, आपने भांप लिया होगा कि गन्ना और हसन एक दूसरे से मुहब्बत करते हैं। उनकी शादी का इंतज़ाम कीजिये।"

"मैं भी यही सोच रहा हूँ। मगर राजनीति के कामो में मैं यह बात बिलकुल भूल ही गया हूँ। मैं ने उसे यह वादा भी किया कि उसके लिए एक बीबी का इंतज़ाम करूँगा। मेरे ख्याल से गन्ना हसन के लायक़ बीबी साबित होगी!" खलीफ़ा ने जवाब दिया।

एक दिन खलीफ़ा तथा जुबेदा ने गन्ना और हसन को बुलाकर पूछा–"क्या तुम दोनों शादी कर लेंगे?"

गन्ना का चेहरा खिल उठा। वह बेगम जुबेदा के पैरों पर गिर पड़ी। उसने लज्जा के साथ अपनी स्वीकृति दे दी।

हसन ने धीमी आवाज़ में कहा–"हुजूर, आपका यह गुलाम आपकी मेहर्बानी के समुंदर में अपने को भूलता जा रहा है। मगर इस मीठे नामवाली लड़की को अपनी घरवाली बनाने के पहले मैं बेगम साहिबा से एक सवाल पूछना चाहता हूँ।"

"वह कैसा सवाल है? पूछो तो।" जुबेदा ने पूछा।

"आप मेहर्बानी करके पहले इस लड़की से पूछिये कि इसकी अभिरुचियाँ मेरी जैसी हैं कि नहीं? मेरे लिए तो खाना-पीना, संगीत, नृत्य, और कविता बहुत ही पसंद हैं। मगर इस लड़की की भी ये ही अभिरुचियाँ हों तो मैं दिल खोलकर इसके साथ प्यार कर सकता हूँ। ऐसा न हो, तो मैं ब्रह्मचारी के रूप में रहना ज़्यादा पसंद करूँगा।" हसन ने जवाब दिया।

बेगम जुबेदा ने गन्ना से पूछा–"गन्ना, तुम ने हसन की बातें सुन ली हैं न? इसका तुम क्या जवाब दोगी?"

गन्ना ने स्वीकृतिसूचक सर हिलाया।

खलीफ़ा ने तुरंत काजी तथा गवाहों को बुला भेजा। शादी का इकरारनामा

लिखवाया गया। तीस दिन तक राजमहल में दावत और मनोरंजन के कार्यक्रम चले। इसके बाद नये दंपति ने अपनी गृहस्थी चलाना शुरू किया।

हसन तथा गन्ना ने अपना सारा वक़्त खाने-पीने तथा मनोरंजन में बिताया। अपने पास जो कुछ धन था, उसे पानी की तरह खर्च कर दिया। अब उनके पास एक भी कौड़ी बची नहीं रही। खलीफ़ा राज्य के कामों में मशगूल था, इसलिए हसन के लिए नियमित वेतन का प्रबंध करना बिलकुल भूल गया। इसलिए वह कर्ज के भार से दबता गया।

इस तरह हसन और गन्ना धन के अभाव में परेशान थे, फिर भी उन्ह खलीफ़ा से याचना करना बिलकुल पसंद न था। गहरी सोच में निमग्न हो गये।

आखिर हसन ने कहा–"हमने सारे पैसे बरबाद कर दिये, गन्ना, मैं ने एक दूसरा उपाय सोच रखा है।

गन्ना ने गहरा निश्वास लेकर पूछा–"बताओ, वह उपाय क्या है? मुझ से हो सका, तो मैं भी मदद दूंगी। हम न तो याचना ही कर सकते हैं, न हम अपने ढंग को ही बदल सकते हैं।"

"वैसे बात कुछ नहीं, हमें मरना होगा!" हसन ने सुझाया।

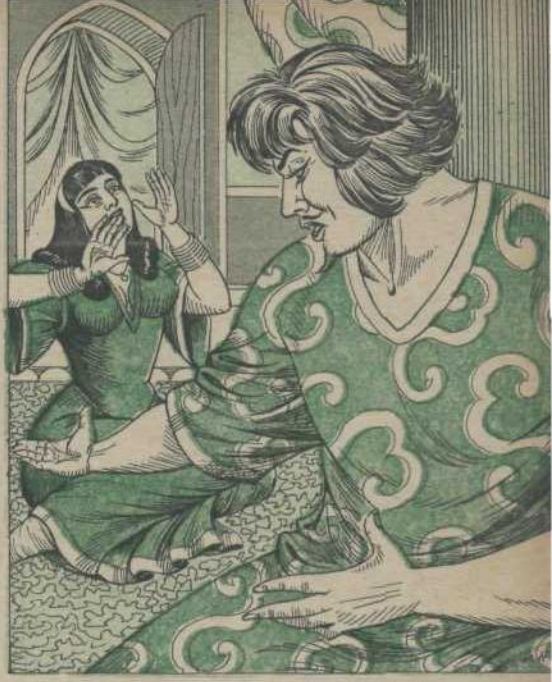

गन्ना डरके मारे चीख उठी–"मैं नहीं मरूँगी। तुम मरना चाहो तो मेरी मदद के बिना तुम को मरना होगा।"

हसन गन्ना की बातें सुनकर नाराज़ नहीं हुआ, शांत स्वर में बोला–"अरी पगली, मैं जब ब्रह्मचारी था, तभी से जानता हूँ कि जिंदा रहना ही ज़िंदगी का एक मात्र रास्ता है। तुम्हारी मोटी अक़्ल को देखने पर मुझे लगता है कि मैं ब्रह्मचारी बना हुआ होता तो क्या ही अच्छा होता! तुम ने जल्दबाजी में आकर जवाब न दिया होता तो मैं ने असली रहस्य बता दिया होता। और मैं जिस तरह की मौत की बात कहने जा

रहा हूँ, उसे सुनकर तुम खुश हुई होती। क्या तुम यह भी नहीं समझ पाती कि सचमुच हमारे मरने की बनिस्बत मरने के समान अभिनय करने से सोना बरस जायगा?"

गन्ना ने हंस कर पूछा–"यह कैसे मुमक़िन है?"

"सुनो, मेरे मरते ही मुझे एक कफ़न में लपेट कर मेरे पैरों को मक्का में स्थित काबे की ओर करके लिटा दो। मेरे चेहरे पर मेरी पगड़ी रख दो। इस के बाद ज़ोर से चिल्लाकर रो पड़ो। अपने कपड़े फाड़ते, बाल नोचने का अभिनय करो। जब तुम शोक का अवतार जैसी बन जाओगी, तब ज़ुबेदा रानी के पास दौड़ कर जाओ। वहाँ पर सिसकियाँ लेते, बीच बीच में बेहोश होकर उनसे बतला दो कि मेरी मौत हो गयी है। तब नीचे गिर जाओ और घंटे भर ज़मीन पर ही पड़ी रहो। वे लोग घंटे भर तुम्हारा उपचार करेंगे! फिर क्या, हमारे घर सोने की वर्षा होगी, समझी?" हसन ने उत्तर दिया।

"ऐसी मौत तो बड़ी आसान ही है। मैं तुम्हारी मदद दूंगी, लेकिन मैं कैसे मरूँ?" गन्ना ने पूछा।

"यह सब अल्लाह देख लेगा! तुम मेरे कहे मुताबिक़ करो। लो, देखो, अभी मर रहा हूँ।" इन शब्दों के साथ हसन कमरे के बीच पैर पसार कर लेट गया।

गन्ना ने हसन के कपड़े खोल कर उसे कफ़न में लपेट दिया, उसके चेहरे पर

पगड़ी रख दी, हसन के कहे अनुसार वह चिल्ला चिल्लाकर रोने लगी। तब अपने कपड़े फाड़ कर बाल बिखेरे गालों पर नोच कर, जुबेदा के पास दौड़ गयी। और ज़ोर-शोर से सिसकियाँ भरने लगी।

गन्ना की हालत देखते ही जुबेदा ने भांप लिया कि उसे कैसी आफ़त आ गयी है। वह गन्ना को अपनी गोद में लेकर उसे होश में लाने की कोशिश करने लगी। बड़ी मुश्किल के साथ उसने जुबेदा को सूचित किया कि उसका शौहर कल रात को बदहजमी की बीमारी से मर गया है, तब वह बोली–"अब मेरे लिए मौत के सिवाय कोई दूसरा रास्ता नज़र नहीं आ रहा है।" ये शब्द कह कर फिर बेहोश हो गयी।

वहाँ पर रहनेवाली सभी नारियाँ रो पड़ीं। वे सब गन्ना के वास्ते तथा उनका मनोरंजन करनेवाले हसन की मौत की याद करके रोने लगीं। इस के बाद गन्ना को गुलाब जल में डुबो कर उसका परामर्श किया।

जुबेदा बड़ी देर तक रोती रही। तब अपने निजी खजांची को बुलाकर बोली–"मेरे कोश से दस हज़ार दीनार गन्ना के घर पहुँचा दो। इसके शौहर की अंतिम क्रियाएँ ठाठ से संपन्न हों।"

खजांची ने दीनारों की थैली को एक खोजा की पीठ पर लदवा कर अबू अल हसन के घर पहुँचा दिया।

इसके बाद जुबेदा गन्ना के गले लगकर उसे तसल्ली बंधाते हुए बोली–"अल्लाह

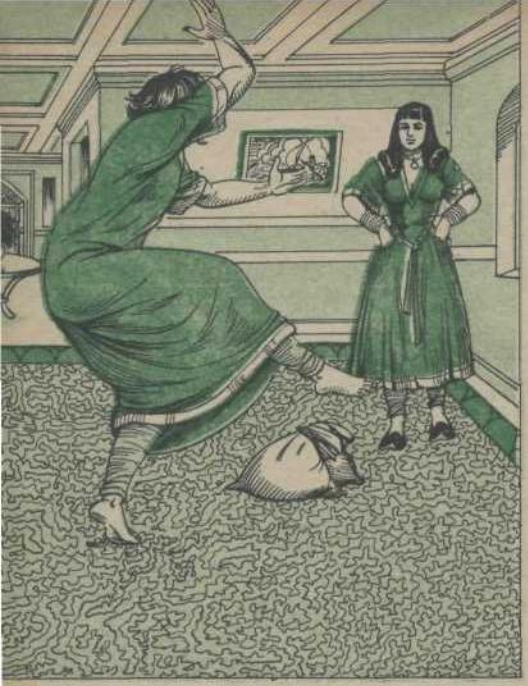

तेरी तक़लीफ़ों को कम करे ! तुम अपने शौहर की आयु लेकर चिरकाल तक जिओ।"

गन्ना ने जुबेद्रा के हाथों को अपने आँसुओं से तर किया, तब उससे विदा लेकर अपने घर चली गयी।

घर पहुँचते ही गन्ना खुशी से हंसते हुए बोली–"अजी, मजाक़िये, अब ज़िंदा हो जाओ। आज फ़ाका करने से हमें छुट्टी मिल गयी।"

अबू अल हसन ने कफन को उठा कर फेंक दिया। गन्ना की पदद से दीनारों की थैली को कमरे के बीच खींच लिया। एक पैर पर उछलते थैली के चारों तरफ़ चक्कर काटते नाचने लगा।

इसके उपरांत हसन ने अपनी औरत का अभिनन्दन किया और बोला–"अभी सारा खेल खतम नहीं हुआ। अब मरने की बारी तुम्हारी है। पर देखना यह है कि तुमने जैसे जुबेदा को दगा दिया, वैसे शायद मैं खलीफ़ा को धोखा नहीं दे सकता। फिर भी हमें खलीफ़ा को समझाना है कि दगा देना केवल वे ही नहीं जानते और लोग भी जानते हैं।"

फिर क्या था, वह जिस कफ़न में पहले लिपटा गया था उसी में गन्ना को लपेट दिया। फिर उसने रोनी सूरत बनायी, आँखों पर प्याज मल कर कपड़े फाड़ कर खलीफ़ा के दरबार की ओर दौड़ गया।

हमेशा खुश रहनेवाले हसन को रोते देख खलीफ़ा बहुत ही घबरा उठा। उसने सामने जाकर पूछा कि उस का कारण क्या है। हसन दहाड़े मार कर रो पड़ा–"ओह, गन्ना ! मेरी हालत क्या होगी !" इन शब्दों के साथ चेहरे पर कपड़ा ढक कर रो पड़ा।

खलीफ़ा यह सोचकर विचलित हो गया कि उसे अब गन्ना की मौत की खबर सुननी पड़ेगी। उस की आँखों से आँसू निकले। उसने हसन के कंधों पर हाथ रख कर कहा–"भाई, अल्लाह की तुम पर मेहर्बानी हो ! गन्ना की जो आयु खुदा

ने ली, वह तुम्हें देगा। मैंने इसलिए उस के साथ तुम्हारी शादी की कि वह तुम को खुशी के समुंदर में डुबो देगी। ओफ़! तुम को तो वह दुख के सागर में डुबो कर चली चयी। बेचारी ग़न्ना!" यों कहते वह गरम गरम आँसू गिराने लगा।

खलीफ़ा के साथ जफ़र वगैरह लोग भी रो उठे।

इसके उपरांत खलीफ़ा ने अपने खज़ांची को बुलाकर आदेश दिया–"इस हसन के साथ दस हज़ार दीनार भेज दो। यह अपनी औरत की अंतिम क्रियाएँ ठाठ से करेगा।"

खज़ांची धन लाने चला गया। तब हसन ने खलीफ़ा का हाथ चूम कर ख़ूब रोते हुए खलीफ़ा से छुट्टी ली। वह घर लौट कर लाश की भांति पड़ी हुई गन्ना से बोला–"क्या तुमने यह सोच रखा है कि हर आँसू के लिए एक दीनार कमाने की हुनर तुम्हीं जानती हो? इस गठरी को तो देखो।" यों कहते हसन ने गन्ना पर लपेटे कपड़े को हटाया और फिर बोला–"हमारा खेल अभी ख़तम नहीं हुआ। अब हमें वह उपाय करना होगा जिससे हम खलीफ़ा तथा जुबेदा के क्रोध से बच निकले।" इस के लिए उन्हें क्या-क्या करना होगा, यह भी हसन ने गन्ना को समझाया।

खलीफ़ा उस दिन दरबार खारिज़ कर जुबेदा के महल को चला गया। जुबेदा

अपनी परिचारिका को खो बैठी थी, इसलिए उसका परामर्श करने लगा। उसी वक़्त जुबेदा ने खलीफ़ा का परामर्श इसलिए किया कि खलीफ़ा अपने साथी हसन को खो बैठा है।

खलीफ़ा ने हँसकर अपने साथ आये मन्शूर से कहा–"रानी साहिबा भूल कर रही हैं। उनसे सच्ची बात बता दो।"

मन्शूर ने जुबेदा से कहा–"जी हाँ, महारानीजी, अबू अल हसन के लिए कोई खतरा नहीं हुआ है। वह एक दम तंदुरुस्त है। उसकी औरत ही मर गयी है।" जुबेदा ने सुना कि खलीफ़ा ने अभी अभी गन्ना की अंतिम क्रियाओं के निमित्त दस हज़ार दीनारें भेज दिया है। जुबेदा बोली–"आप ही मेरे खजांची से पूछिये कि मैंने अबू अल हसन की अंतिम क्रियाओं के लिए कितना धन भेजा है?"

खलीफ़ा और उसकी बेगम थोड़ी देर तक वाद-विवाद करने लगे। खलीफ़ा कहता था कि गन्ना की मौत हो गयी है, मगर बेगम जुबेदा बताती थी कि हसन की मौत हो गयी है। आखिर खलीफ़ा ने मन्शूर को आदेश दिया–"तुम हसन के घर जाकर देख आओ कि किसकी मौत हो गयी है!" उसके लौटने के पहले खलीफ़ा तथा बेगम जुबेदा ने दाँव भी लगाये।

हसन अपने घर में बैठे इस बात का इंतज़ार कर रहा था कि खलीफ़ा की ओर से उनका हाल जानने के लिए कोई आ धमकेगा। उसने द्वर पर से मन्शूर को अपने घर की ओर आते देख गन्ना से कहा–"गन्ना, खलीफ़ा के आदेश पर मन्शूर सच्ची बात जानने के लिए आ रहा है, तुम जल्दी मर जाओ।"

मन्शूर के आते ही गन्ना कमरे के बीच लाश की भांति लेटी हुई थी। मुँह पर वस्त्र ढके रोते हुए हसन उसके निकट बैठा हुआ था। मन्शूर ने उस दृश्य को देखा, गन्ना के वास्ते जाँसू बहाये, हसन के गले लगकर उसे सांत्वना दी, फिर बिदा लेकर

खलीफ़ा के पास लौट कर बोला–"बेगम जुबेदा से भूल हो गयी है। हसन ज़िंदा है, और गन्ना की मौत हो गयी है।"

खलीफ़ा ने खुश होकर बताया–"बेगम, तुम दाँव हार गयी हो।"

जुबेदा ने झल्ला कर कहा–"यह मन्शूर तो झूठाखोर है। गन्ना को रोते हुए आये मेरी सभी दासियों ने देखा है। मेरी बात को झुठलाने के लिए आपका यह षड्यंत्र करना ज़रा भी अच्छा नहीं है। मैं भी अभी किसी को भेजकर सच्ची बात ज़ाहिर करवा दूंगी। मेरी बात सच निकलेगी तो मन्शूर का सर कटवा देना होगा।"

इसके बाद जुबेदा ने अपनी बूढ़ी दासी को सच्ची बात जान लाने को भेज दिया।

हसन इस बात का पता लगाने के लिए इंतज़ार में बैठा हुआ था कि इस बार कौन आयगा, दूर पर जुबेदा की दासी को देख वह चिल्ला पड़ा–"गन्ना, अब मैं मर गया हूँ।"

दासी ने भीतर आकर देखा कि गन्ना हसन की लाश के पास बैठे रो रही है। दासी ने उसे तसल्ली दी। लौटकर जुबेदा से बताया कि गन्ना का शौहर हसन ही मर गया है। तुरंत जुबेदा ने विजय की खुशी में मन्शूर का सर कटवाने के लिए खलीफ़ा से पूछा।

"यदि मन्शूर ने झूठ कह दिया तो इस का मतलब है कि मैं ने भी झूठ बताया है। सच्ची बात जान लेनी है तो हम दोनों को हसन के घर जाना है। जल्दी तैयार हो जाओ।" खलीफ़ा ने कहा।

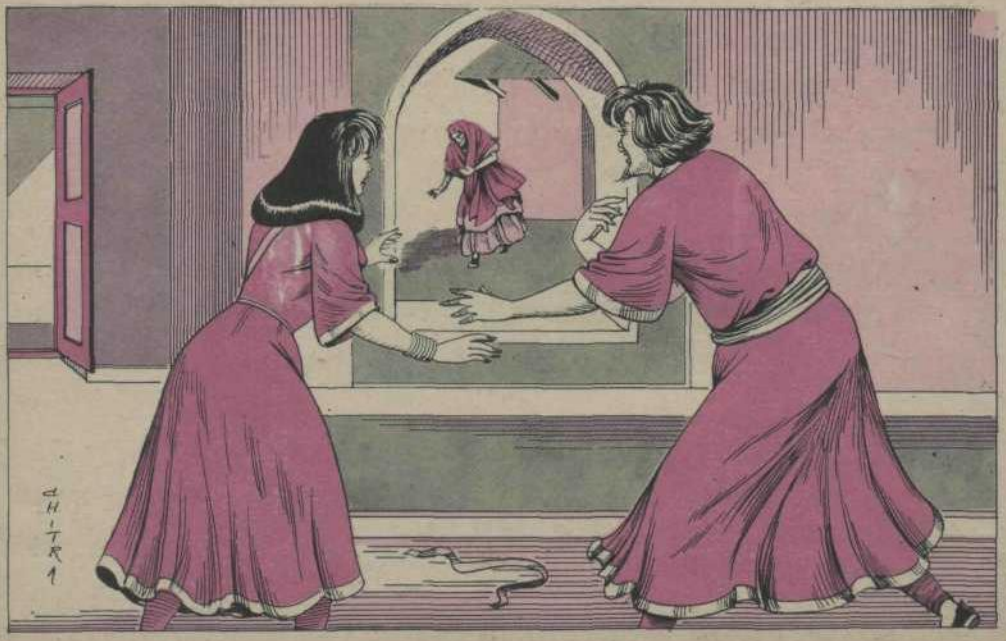

जुबेदा और खलीफ़ा के साथ एक भीड़ हसन के घर के लिए चल दड़ी ।

हसन ने पहले ही ताड़ लिया था कि ऐसा हो सकता है, उस ने गन्ना से कहा– "गन्ना, अब हम दोनों को मरना है।"

खलीफा वगैरह ने घर के भीतर जाकर देखा, वहाँ पर दो लाशें पड़ी हुई हैं। सब उन्हें देख एक दम पीले पड़ गये ।

जुबेदा ने कहा–"मगर यह हमें कैसे मालूम हो कि इन में से कौन पहले मर गया है ?"

"यह बात जो बता देगा, उसे मैं दस हज़ार दीनार दूंगा।" खलीफ़ा ने कहा ।

"जहाँपनाह, मुझे दे दीजिये। मैं ही पहले मर गया हूँ।" कफ़न के भीतर से हसन चिल्ला उठा।

लाश के अन्दर से बातें निकलते देख जुबेदा घबरा गयी। मगर सच्ची बात का पता लगाकर खलीफ़ा कमरे के बीच लुढ़क दड़ा और पागल की तरह हंसते बोला– "अरे हसन, हंसते लोट-पोट होते मैं मरता जा रहा हूँ।"

खलीफ़ा ने जब तक अपने को संभाला, तब तक हसन और गन्ना उठ बैठे। इसके बाद हसन खलीफ़ा के पैरों पर गिर पड़ा। गन्ना जुबेदा के चरणों पर गिर पड़ी। दोनों ने अपनी अपनी करनी के लिए माफ़ी मांगी ।

इसके बाद हसन ने खलीफ़ा से कहा– "हुजूर, जब तक मैं ब्रह्मचारी था, पैसों की मैं बिलकुल परवाह नहीं करता था। मगर यह गन्ना बोरों से भरा सोना भी निगल सकती है। मौक़ा मिले तो हुजूर के खज़ाने तथा खज़ांची को भी खा जायगी।"

हसन की बातें सुनने पर खलीफ़ा तथा जुबेदा ने उन्हें माफ़ कर दिया और प्रत्येक को दस-दस हज़ार दीनार और दे दिये ।

फिर कभी हसन को कोई तक़लीफ़ न हो, इस ख़्याल से खलीफ़ा ने हसन को भी जफ़र के बराबर वेतन का इंतज़ाम किया। इसके बाद हसन तथा गन्ना किसी प्रकार की तक़लीफ़ के बिना मजे से अपने दिन बिताने लगे। (समाप्त)

खलीफ़ा के पास लौट कर बोला–"बेगम जुबेदा से भूल हो गयी है। हसन जिंदा है, और गन्ना की मौत हो गयी है।"

खलीफ़ा ने खुश होकर बताया–"बेगम, तुम दाँव हार गयी हो।"

जुबेदा ने झल्ला कर कहा–"यह मन्शूर तो झूठाखोर है। गन्ना को रोते हुए आये मेरी सभी दासियों ने देखा है। मेरी बात को झुठलाने के लिए आपका यह षड्यंत्र करना ज़रा भी अच्छा नहीं है। मैं भी अभी किसी को भेजकर सच्ची बात ज़ाहिर करवा दूंगी। मेरी बात सच निकलेगी तो मन्शूर का सर कटवा देना होगा।"

इसके बाद जुबेदा ने अपनी बूढ़ी दासी को सच्ची बात जान लाने को भेज दिया।

हसन इस बात का पता लगाने के लिए इंतज़ार में बैठा हुआ था कि इस बार कौन आयगा, दूर पर जुबेदा की दासी को देख वह चिल्ला पड़ा–"गन्ना, अब मैं मर गया हूँ।"

दासी ने भीतर आकर देखा कि गन्ना हसन की लाश के पास बैठे रो रही है। दासी ने उसे तसल्ली दी। लौटकर जुबेदा से बताया कि गन्ना का शौहर हसन ही मर गया है। तुरंत जुबेदा ने विजय की खुशी में मन्शूर का सर कटवाने के लिए खलीफ़ा से पूछा।

"यदि मन्शूर ने झूठ कह दिया तो इस का मतलब है कि मैं ने भी झूठ बताया है। सच्ची बात जान लेनी है तो हम दोनों को हसन के घर जाना है। जल्दी तैयार हो जाओ।" खलीफ़ा ने कहा।

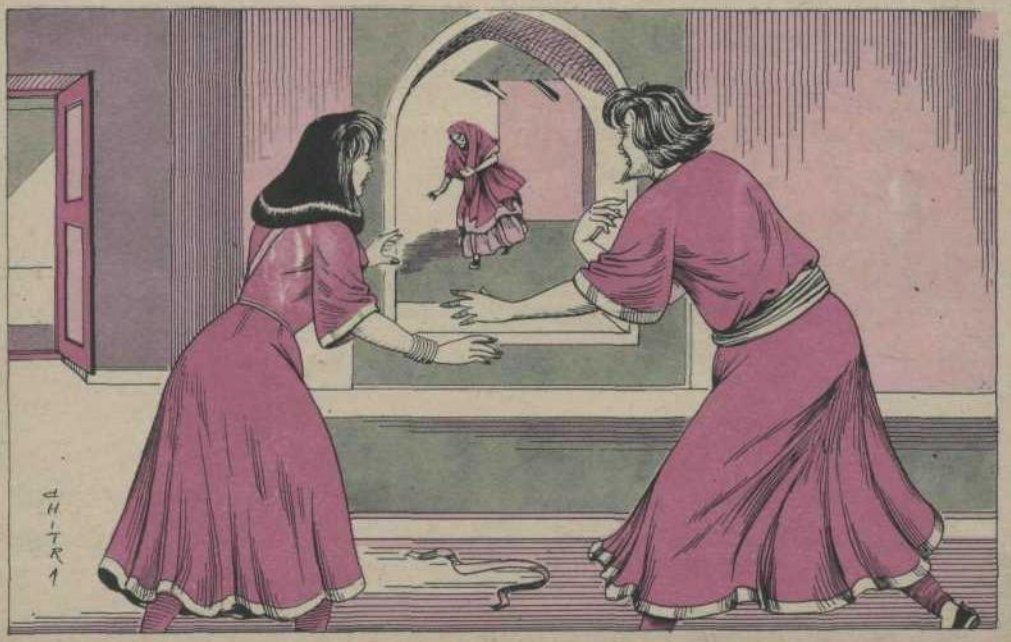

जुबेदा और खलीफ़ा के साथ एक भीड़ हसन के घर के लिए चल दड़ी ।

हसन ने पहले ही ताड़ लिया था कि ऐसा हो सकता है, उस ने गन्ना से कहा– "गन्ना, अब हम दोनों को मरना है।"

खलीफा वगैरह ने घर के भीतर जाकर देखा, वहाँ पर दो लाशें पड़ी हुई हैं । सब उन्हें देख एक दम पीले पड़ गये ।

जुबेदा ने कहा–"मगर यह हमें कैसे मालूम हो कि इन में से कौन पहले मर गया है ?"

"यह बात जो बता देगा, उसे मैं दस हज़ार दीनार दूंगा ।" खलीफ़ा ने कहा ।

"जहाँपनाह, मुझे दे दीजिये । में ही पहले मर गया हूँ ।" कफ़न के भीतर से हसन चिल्ला उठा ।

लाश के अन्दर से बातें निकलते देख जुबेदा घबरा गयी । मगर सच्ची बात का पता लगाकर खलीफ़ा कमरे के बीच लुढ़क दड़ा और पागल की तरह हंसते बोला– "अरे हसन, हंसते लोट-पोट होते में मरता जा रहा हूँ ।"

खलीफ़ा ने जब तक अपने को संभाला, तब तक हसन और गन्ना उठ बैठे । इसके बाद हसन खलीफ़ा के पैरों पर गिर पड़ा । गन्ना जुबेदा के चरणों पर गिर पड़ी । दोनों ने अपनी अपनी करनी के लिए माफ़ी मांगी ।

इसके बाद हसन ने खलीफ़ा से कहा– "हुजूर, जब तक मैं ब्रह्मचारी था, पैसों की मैं बिलकुल परवाह नहीं करता था । मगर यह गन्ना बोरों से भरा सोना भी निगल सकती है । मौक़ा मिले तो हुजूर के खज़ाने तथा खज़ांची को भी खा जायगी ।"

हसन की बातें सुनने पर खलीफ़ा तथा जुबेदा ने उन्हें माफ़ कर दिया और प्रत्येक को दस-दस हज़ार दीनार और दे दिये ।

फिर कभी हसन को कोई तक़लीफ़ न हो, इस ख्याल से खलीफ़ा ने हसन को भी जफ़र के बराबर वेतन का इंतज़ाम किया । इसके बाद हसन तथा गन्ना किसी प्रकार की तक़लीफ़ के बिना मजे से अपने दिन बिताने लगे । (समाप्त)

सोने की चिड़िया

सुंदरवन में एक बड़े आम के पेड़ पर एक उल्लू बैठा था। चांदनी की रात में जंगल की शोभा देख उल्लू बड़ा प्रसन्न था। तभी उसे पेड़ के नीचे कोई आहट सुनायी दी, नीचे देखा तो एक बहुत बड़ा सांप उसे नज़र आया। सांप अपने मुंह में एक चिड़िया का अण्डा दबाये रेंगते आया और पेड़ के एक खोखले में उस अण्डे को रखकर अपने रास्ते चला गया।

सवेरे नीचे आकर उल्लू ने खोखले में देखा, अण्डे से एक चिड़िया बाहर निकल आयी थी, चिड़िया के पर सोने जैसे चमक रहे थे।

उल्लू को उस चिड़िया पर रहम आयी। उसने उसे अपने घोंसले में लाकर बड़े ही प्यार से उसे पाल-पोसकर बड़ा किया। दो महीने के होते-होते वह एक सुंदर सोने की चिड़िया के रूप में बदल गयी।

सोने की चिड़िया के साथ शादी करने के लिए जंगल के सारे पक्षी उत्सुक हो उठे। मगर चिड़िया ने इनकार किया।

सुंदरवन के पक्षियों का राजा दो सरवाला एक विचित्र पक्षी था। उसकी रानी एक मोरनी थी। उसे इस बात का घमंड था कि उस जैसा सुंदर चिड़िया कोई दूसरी नहीं है। सोने की चिड़िया की खूबसूरती सुनकर मोरनी के मन में ईर्ष्या पैदा हो गयी। उसने नकली ढ़ंग से अपने को अलंकार किया और वह सोने की चिड़िया को देखने गयी। उसके अलंकार को देख सोने की चिड़िया खिल खिलाकर हंस पड़ी। वह यह नहीं जानती थी कि मोरनी पक्षियों की रानी है।

सोने की चिड़िया को देखने के बाद रानी मोरनी की ईर्ष्या दुगुनी हो गयी। उस चिड़िया ने उसे देख हंस दिया था,

ए. सी. सर्कार, जादूगर

इस कारण उसका द्वेष भी बढ़ गया। रानी मोरनी ने आदेश दिया कि सोने की चिड़िया की शादी एक काले कौए के साथ हो जाय। इसी प्रकार सोने की चिड़िया तथा काले कौए की शादी हुई। वे दोनों एक पेड़ पर अपनी गृहस्थी चलाने लगे।

इतना सब करने के बाद भी मोरनी रानी का क्रोध शांत न हुआ। उसे मालूम हो गया कि सोने की चिड़िया तथा काला कौआ आराम से गृहस्थी चला रहे हैं, उन्हें उस सुख से भी वंचित करने का निश्चय कर अपने पति राजा के पास जाकर बोली– "तुम दिन ब दिन कमज़ोर होते जा रहे हो, ऐसा ही हुआ तो जल्दी तुम बूढ़े हो जाओगे, यदि तुम रोज सोने का अण्डा खाओगे तो तुम्हारा यौवन बना रहेगा। तुम अपने नौकरों को चिड़िया के घोंसले पर पहरा बिठा कर उसके अण्डों को मंगवाकर खाया करो।"

रानी की सलाह पाकर पक्षियों के राजा ने अपने भटों को आदेश दिया कि वे सोने की चिड़िया के घोंसले पर पहरा दे और जब भी वह अण्डा दे, उसे लाकर राजा को सौंप दे। यह राजा का आदेश था, इसलिए सोने की चिड़िया कुछ विरोध नहीं कर पायी। वह अपने पति के साथ उस जंगल को छोड़ भाग जाना चाहती थी, मगर यह भी संभव न हुआ। रानी ने पचास बाजों का पहरा बिठा दिया था।

एक दिन उल्लू सोने की चिड़िया को देखने आया और सारी बातें जानकर उसने

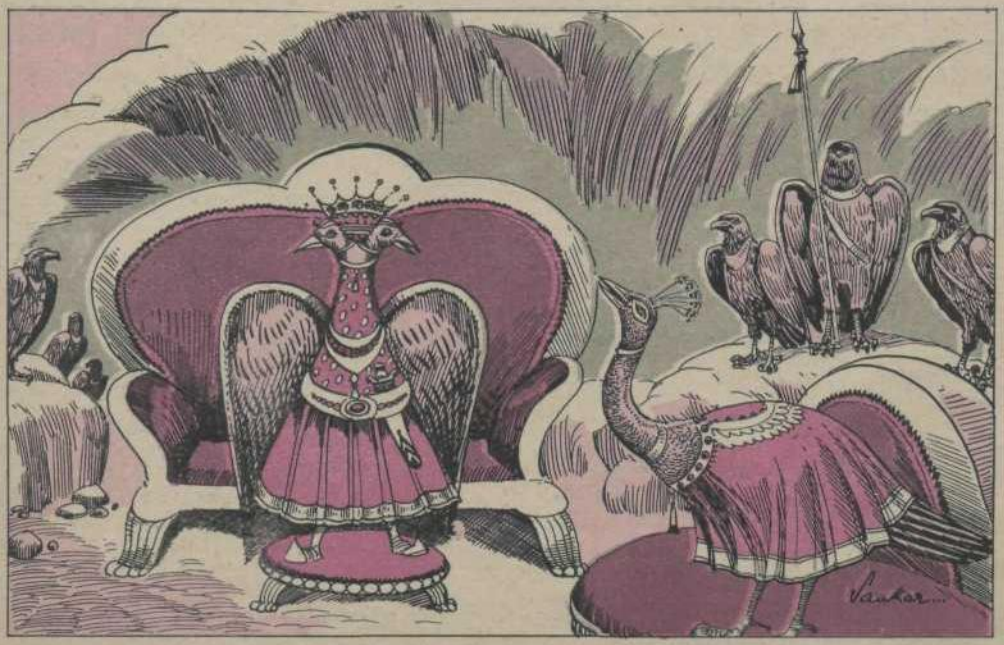

वादा किया कि वह उस की इस विपत्ति को दूर करने का कोई उपाय सोचेगा।

उल्लू पक्षियों की चिकित्सा का ज्ञान रखता था। वह इसके पूर्व पक्षियों के राजा का इलाज करके उसकी प्रशंसा पा चुका था। राजा का मन बदलना चाहे तो रानी के उसके निकट रहने पर संभव न होगा। इसलिए कोई न कोई उपाय करके रानी मोरनी को दूर भेजना होगा।

इस प्रयत्न में उल्लू दूसरे जंगल में चला गया। वहाँ पर रहनेवाले रानी मोरनी के माता-पिता के लिए उसने एक बड़ी दावत दी। उस समय उनके भोजन में गुप्त रूप से कोई दवा डालकर उन्हें बीमार बना दिया।

रानी मोरनी को यह खबर सिली कि उसके माता-पीता बीमार हैं। मोरनी अपने पति की आज्ञा लेकर अपने माता-पिता को देखने गयी। दूसरे दिन सवेरे उल्लू जब पक्षियों के राजा के पास पहुँचा तब पक्षियों का राजा सोने की चिड़िया का अण्डा खाने जा रहा था।

"महाराज, जल्दबाजी में आकर वह अण्डा मत खाओ। वह ताजा अण्डा नहीं है। या तो वह अण्डा पुराना होगा या सड़ा-गला होगा।" उल्लू ने बताया।

"यह अण्डा तो कल रात को दिया हुआ है।" राजा ने जवाब दिया।

"इसकी जांच करके देखिये। पानीवाले इस गिलास में डाल दीजिये। यदि अण्डा

ताजा होगा तो डूब जायगा, वरना तिर जायगा।" उल्लू ने समझाया।

"यह बात मैं भी जानता हूँ।" इन शब्दों के साथ पक्षियों के राजा ने उस अण्डे को उस गिलास में डाल दिया जिस में डालने को उल्लू ने बताया था। वह अण्डा पानी में डूबा नहीं, तिर गया।

"तुम्हारा कहना सच है। इसे ले जाकर फेंक दो।" पक्षियों के राजा ने कहा। उल्लू ने वह अण्डा ले जाकर सोने की चिड़िया को दिया। वह बहुत खुश हुई और बोली–"इसे तुमने कैसे बचाया?"

उल्लू ने हंस कर जवाब दिया–"मैं ने एक चालाकी की है, इसे एक बार मैं ने एक लड़के के करते देख लिया था। वह तमाशा यह है कि वह लड़का पानी में अक्सर अण्डा छोड़ देता था। वह तुरंत डूब जाता था। इसके बाद वह अण्डे को निकाल देता। उस पानी में खूब नमक मिला देता, तब पानी भरकर ऐसा अभिनय करता, मानों कोई मंत्र पढ़ रहा हो, तब उस नमकवाले पानी मे अण्डा डाल देता। तब अण्डा उस पानी में तिर जाता। मैं ने भी पक्षीयों के राजा के सामने यही युक्ति करके इस आण्डे को तिरा दिया। राजा ने यक़ीन किया कि यह अण्डा सड़ गया है।"

वह अण्डा सोने की चिड़िया के घोंसले में बच्चा बने, यह ख़तरनाक था। इसलिए उल्लू उस अण्डे को अपने घोंसले में ले गया। वहाँ पर सेंक कर उसे बच्चा बनाया। एक रात को उस बच्चे के साथ दूर के एक जंगल में उड़कर चला गया।

रानी मोरनी अपने माता-पिता को देख कर लौट रही थी। तब किसी शिकारी ने उसे बाण से मार डाला। इसके कुछ दिन बाद पक्षियों का राजा भी मर गया। तब सोने की चिड़िया तथा काले कौए को आज़ादी मिल गयी। वे दोनों उड़ कर उस जंगल में चले गये, जहाँ पर उनका बच्चा उल्लू के आश्रय में बढ़ रहा था। फिर वहीं आराम से अपने दिन काटने लगे।

पंचायत

आफ्रिका के एक बड़े सरोवर के किनारे रामोगी नामक एक बूढ़ा अपने सात पुत्रों, उनकी बहुओं तथा उनके बाच्चों के साथ निवास करता था। उनकी सारी झोंपड़ियाँ मिलकर एक गाँव जैसी थीं।

रामोगी के मरने के बाद वह प्रदेश ज्येष्ट पुत्र के अधिकार में आ गया। इसलिए बाक़ी पुत्रों को अपने परिवारों को लेकर कहीं दूसरी जगह अपने निवास का प्रबंध करना पड़ा।

उन में अंतिम दोनों पुत्र पोधू और अरूवा बचपन से ही साथ साथ रहते आये थे। वे बचपन में एक साथ सोते, एक साथ खेलते, यदि कोई एक शब्द कहता तो दूसरे शब्द की पूर्ति दूसरा भाई कर देता। इस तरह उनमें गहरा स्नेह था, आख़िर उन दोनों ने दो सगी बहनों के साथ ही विवाह भी किया।

इसलिए उन दोनों ने कहीं एक जगह निवास बनाकर साथ साथ रहना चाहा। यह उनके रिवाज़ के विरुद्ध था, फिर भी उन दोनों ने इस की परवाह नहीं की।

अब समस्या यह थी कि उनके निवास का प्रबंध कहाँ पर किया जाय! रामोगी का परिवार जहाँ बसा था, उसकी पूर्वा दिशा में एक घना जंगल भा। उन दोनों भाइयों ने निश्चय कर लिया कि उस जंगल के समीप निवास का प्रवंध कर वहीं पर खेती की जाय।

यह काम अत्यंत साहस भरा था। इसके कई कारण थे। एक तो भयंकर जंगल था। दूसरे उसे तो लोग मंत्रोंवाला जंगल बताते थे और यदि कोई उस जंगल में जाता तो वह या तो गिरगिट बन जाता या कोई जानवर। इसलिए डर के मारे

उस प्रदेश के लोग उधर झांककर देखते तक न थे। अलावा इसके उस जंगल में हाथी थे। इसलिए उन्हें देख लोग डरते थे। साथ ही लोगों का विश्वास था कि हाथी मंत्रों की शक्तियाँ रखते हैं।

ऐसे भयंकर जंगल के किनारे पर पोधू तथा अरूवा ने घर बनाकर ज्वार बोया, ज्वार में बालें भी निकल आयी थीं।

एक दिन अरूवा गाय-भैंस को हांकते बाहर चला गया। पोधू घर में पड़ा हुआ था, तभी बच्चों की चिल्लाहटें सुनायी दीं–"हाथी आ गये, हाथी!" पोधू झठ उठ बैठा, भाला लेकर बाहर की ओर भाग गया।

उसने देखा कि हाथियों का एक दल अपनी सूंड़ों से ज्वार के पौधों को उखाड़ रहा है। पोधू चिल्ला उठा, तभी सभी हाथी ज्वार को चरना छोड़ उसकी ओर बढ़े और उस पर बड़े ज़ोर का हमला करने लगे।

पोधू ने सबसे बड़े हाथी पर निशाना करके अपना भाला फेंक दिया। वह हाथी की बगल में जा घुसा। वह हाथी क्रोध और पीड़ा से घींकार कर उठा। इसके बाद सब हाथी इस तरह जंगल में भाग गये मानों आपस में सलाह-मशविरा कर निर्णय कर लिया हो।

इस घटना के द्वारा पोधू से एक भारी अपराध हो गया। उसने हाथी पर जो भाला फेंका था, वह मामूली भाला न था। वह रामोगी के वंश में परंपरा से रहता आया था। कहा जाता था कि किसी युग में नंदो वंश के लोगों ने वह भाला तैयार किया था और उसे मंत्र की शक्तियाँ भी प्राप्त हैं। रामोगी ने ज़रूरत के समय और भालों का तो प्रयोग किया था, मगर उसका उपयोग अब तक नहीं किया था। उसने मरते समय अपनी चीज़ों में से एक एक चीज़ एक पुत्र को देते हुए यह भाला अरूवा की दिया था। अरूवा उसे अपनी जान से ज्यादा मानता था। जल्दी में

पोधू ने यह भाला ले जाकर हाथी पर फेंका था और वह भाला हाथियों के साथ जंगल में चला गया था।

अरूवा ने घर लौटकर जान लिया कि उसका भाला कैसे खो गया है, क्रोध में आकर उसने पोधू से पूछा–"मेरा भाला मुझे वापस ला दो।"

"अरूवा, तुम्हारा भाला हाथियों के साथ उस भयंकर जंगल में चला गया है। वह कैसे लाया जा सकता है? उसके बदले में बढ़िया भाला ख़रीद कर दे दूंगा।" पोधू ने समझाया।

"मुझे तो अपना ही भाला चाहिये, अगर तुम उसे मुझे न ला दोगे, तो तुमको मैं जान से मार डालूँगा।" अरूवा चिल्ला उठा।

"अच्छी बात है, मैं तुम्हें वह भाला ला दूंगा, अथवा इसी प्रयत्न में मर जाऊँगा।" पोधू ने जवाब दिया।

दूसरे दिन तड़के ही पोधू उठा और एक भाला लेकर चमड़े की थैली कंधे पर डाल ली, तब जंगल में जा पहुँचा। जंगल के बीच ठण्डा था, नमी थी और अंधेरा भी था। वह जंगली जानवरों के रास्तों पर दिन भर चलता रहा। मगर उसे कहीं हाथियों के निशान दिखाई नहीं दिये।

संध्या हो चली थी। रास्ता बिलकुल दिखाई न दे रहा था, तब वह एक महा

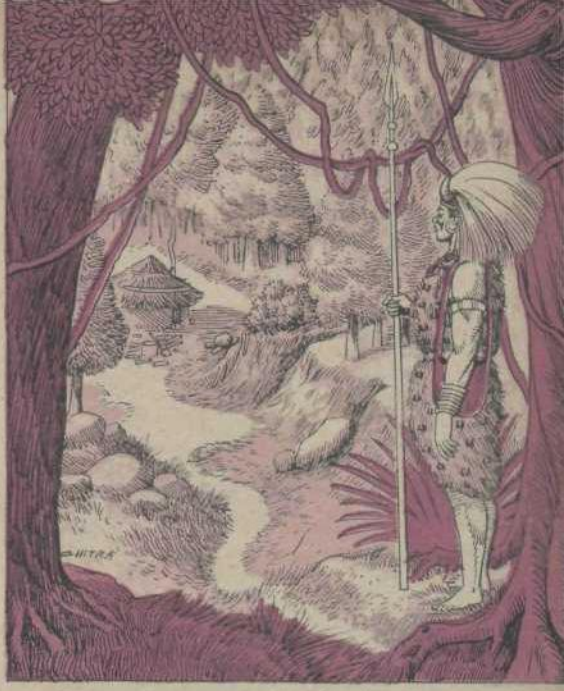

वृक्ष के पास जाकर उसके खोखले में घुस गया। वहीं पर ज्वार की रोटी खाकर सो गया। दूसरे दिन सवेरे उठ कर वह चल पड़ा। बड़ी दूर तक चलने के बाद उसे पेड़ों के बीच एक खाली जगह दिखाई दी। वहाँ पर एक छोटी सी झोंपड़ी थी। झोंपड़ी में से धुआँ निकल रहा था।

पोधू देख ही रहा था कि एक बुढ़िया हाथ में कुल्हाड़ी लेकर बाहर निकली और लकड़ी चीरने लगी। लकड़ी चीरते वह मन ही मन गुनगुना रही थी–"इस बुढ़ापे में मेरी मदद करनेवाला कोई न रहा, इसलिए मुझे कैसी तक़लीफ़ें झेलनी पड़ रहीं हैं।"

पोधू उस बुढ़िया के निकट पहुँचकर बोला–"बुढ़िया माई, मैं तुम्हें लकड़ी चीरके देता हूँ।" यों कहते उसने बुढ़िया के हाथ से कुल्हाड़ी ले ली और जल्दी ही बहुत सारी लकड़ियाँ चीर कर रख दीं।

बुढ़िया ठठाकर हंसते हुए बोली–"वाह बेटा, तुम भी कैसे गँवार हो? मनुष्यों की बस्ती को छोड़ इतनी दूर चले आये हो!"

पोधू ने बुढ़िया को अपनी सारी कहानी सुनायी। बुढ़िया ने सारी कहानी सुनकर कहा–"तुम्हारा यहाँ पर आना साहस से भरा हुआ काम ही है। मैं अभी बता नहीं सकती कि तुम्हारी मदद कर सकूंगी या नहीं, फिलहाल तुम मुझे लकड़ियाँ चीर कर देते हुए यहीं पर रह जाओ।"

पोधू महीने भर बुढ़िया के घर रहा। वह दिन भर लकड़ी चीरता था, फिर भी बुढ़िया उसे कुछ न कुछ डाँट बताती थी। बीच बीच में उसे गालियाँ भी देती थी–"अरे आलसी कमबख्त छोकरे!"

यह सोच कर पोधू निराश हो गया था कि बुढ़िया के द्वारा उसका कोई उपकार न होगा। एक दिन बुढ़िया ने उसे अपने पास बिठाकर कहा–"बेटे, तुम यह मत सोचो कि इतने दिन तुम मेरे घर बेकार बैठे थे। साहस, सहनशीलता और अच्छाई–इन तीनों गुणों के न होने से तुम हाथियों के पास जाकर अपना काम साध नहीं सकते हो, मैं इस बात की जाँच कर रही थी कि तुम में वे गुण हैं कि नहीं, तुमने एक हाथी के साथ अपचार किया है। हाथी तो अपने अपकार को कभी नहीं भूलते। इसलिए तुम्हारी मदद के लिए मैं छोटी सी चीज़ देती हूँ।" यों कहते बुढ़िया ने पोधू के हाथ में एक छोटा सा काँच का मनका दिया जो नीले रंग का था।

दूसरे दिन सवेरे बुढ़िया ने पोधू को हाथियोंवाले प्रदेश का रास्ता बताया।

उसी रास्ते पर चलकर पोधू चार घंटे के अन्दर हाथियोंवाले प्रदेश में

पहुँचा। जंगल के बीच एक विशाल मैदान में हाथी फैले थे। उस मैदान के चारों तरफ़ चहार दीवारी की तरह उखाड़े गये महा वृक्ष एक के ऊपर एक करीने से ऊँचाई तक सजाये गये थे।

उस अहाते में कई हज़ारों हाथी–छोटे-बड़े, नर और मादा–थे। उनके बीच एक बूढ़ा नर हाथी एक छोटे से पहाड़ की भांति लेटा था। शायद वह हाथियों का राजा था।

पोधू हाथियों के राजा के पास जाकर खड़ा हो गया और थर थर कांपने लगा।

हाथियों के राजा ने कुछ कहा। वह पोधू को लगा कि वह उससे पूछ रहा है कि "तुम यहाँ पर क्यों आये हो?" उसने हिम्मत के साथ सर उठा कर उच्च स्वर में कहा–"हाथियो, तुम लोग जब मेरे खेत में चरने आये थे, तब मैंने तुम्हारे प्रति बड़ी निर्दयतापूर्ण व्यवहार किया। मैंने अपने एक भाई के भाले को तुम में से एक पर फेंका। वह भाला तुम लोगों के साथ चला आया है। मेरा भाई कहता है कि वह भाला मैं उसे ले जाकर न दूँ तो वह मुझे मार डालेगा। इसीलिए मैं यहाँ आया हूँ। या तो तुम लोग मुझे वह भाला दे दो या मुझे मार डालो! दोनों कार्य मेरे लिए बराबर हैं।"

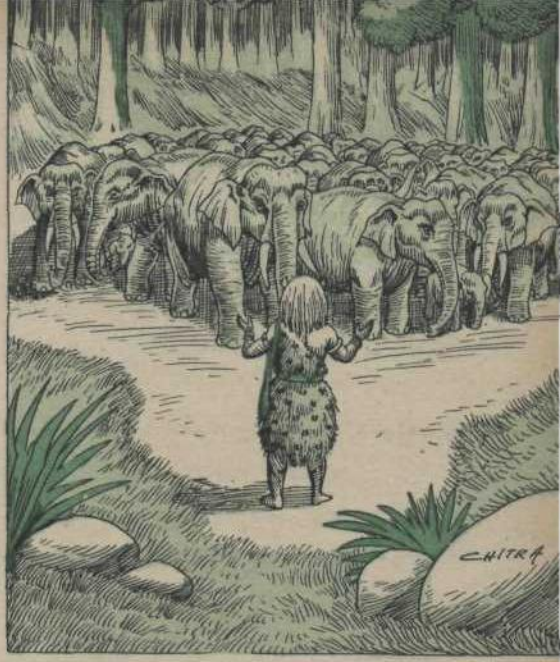

बहुत देर तक हाथी मौन रहे। इसके बाद हाथियों के राजा ने कोई ध्वनि की। बाक़ी हाथी गुन गुना उठे। तब दो हाथी पोधू को दूर के एक पेड़ के नीचे ले गये।

तब हाथियों की पंचायत बैठी। बड़ी देर तक चर्चा खतम न हुई। बीच-बीच में घींकार सुनाई देने लगे। आखिर पंचायत समाप्त सी हो गयी। पोधू को फिर वे हाथी अपने राजा के पास ले गये। हाथियों के राजा ने उससे फिर कुछ कहा।

इस बार हाथी पोधू को एक पेड़ के पीछे ले गये। वहाँ पर कई भाले थे। पोधू ने अपने भाले को पहचान कर ले लिया। तब हाथियों के सामने सर झुका

कर नमस्कार किया। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर घर की ओर चल पड़ा।

लौटती बार शायद वह रास्ता भटक गया है, इसलिए उसे बूढ़ी की झोंपड़ी दिखाई नहीं दी। उसने जो नीले रंग का कांच का मनका दिया था, वह उसी के पास था। रास्ता भटकने की वजह से उसे अपने घर पहुँचने में तीन दिन लगे।

अपना भाला वापस पाकर अरूवा बहुत ही प्रसन्न हुआ। पोधू ने अपना विचित्र अनुभव सबको सुनाकर अपने पास जो कांच का मनका था, उसे दिखाया। उसे एक एक व्यक्ति ने अपने हाथ में ले परख कर देखा और अपने आश्चर्य तथा आनंद प्रकट किया। जब वह मनका बच्चों के हाथों में गया तब अरूवा का लड़का उसे मुँह में डाल कर निगल गया।

इस बात को लेकर उस घर में फिर हलचल शुरू हो गयी। पोधू की पत्नी ने उस लड़के को पीटा। इस पर अरूवा की पत्नी ने अपनी बड़ी बहन की इज्ज़त का भी ख्याल किये बिना उसे गालियाँ दीं।

इस पर पोधू ने अरूवा से कहा–"भैया, जब मैं तुम्हारे भाले को ले गया था, तब तुमने मुझे धमकी दी थी कि मैं यदि उसे ले न आऊँगा तो तुम मुझे मार डालोगे। मैं ने अपनी जान पर खेल कर उसे तुम्हें वापस ला दिया। अब तुम्हारे बेटे ने मेरे मनके को निगल डाला। अब तुम क्या करोगे?"

"कल से मैं अलग रहने लग जाऊँगा। कुत्ते-बिल्ली भी मिल कर रह सकते हैं, मगर भाई-भाई नहीं, यह कहावत हमारे पुरखों ने कभी बतायी है। मैं अपना घर अलग बना लूंगा।" अरूवा ने उत्तर दिया।

"ऐसा ही करो, मगर मेरे कांच के मनके को निगलनेवाले लड़के को मुझे दे दो।" पोधू ने कहा।

अरूवा ने मान लिया। अपने उस लड़के को छोड़ बाक़ी अपने परिवार के साथ अरूवा दूसरी जगह चला गया।

राजा नहुष प्रारभ में बड़ा ही सज्जन व्यक्ति था, परंतु इंद्र-पद के प्राप्त होने पर वह भोगलालसी बना, देवता-नारियों के साथ विहार करते हुए उसने एक दिन इंद्र की पत्नी शचीदेवी को देखा और वह उस पर मोहित हो गया। उसने खबर भेजी कि इस वक्त वह इंद्र है, अतः शचीदेवी उसकी पत्नी बनकर रहे। इस पर शचीदेवी बृहस्पति की शरण में गयी।

यह समाचार मिलने पर नहुष बृहस्पति पर नाराज़ हो गया और उसने ऋषियों तथा देवताओं की निंदा की।

"पर पुरुष की पत्नी की कामना करना महान पाप है।" ऋषि तथा देवताओं ने नहुष को समझाया।

"इन्द्र ने ऐसे अनेक कार्य किये हैं, क्या आप लोग उसे समझा नहीं पाये?" नहुष ने उन लोगों से पूछा।

इस पर देवताओं ने बृहस्पति के पास जाकर समझाया–"महात्मा, नहुष बहुत ही नाराज़ है। आप शचीदेवी को मनाये कि वह नहुष की पत्नी बनकर रहे, वरना जगत के लिए हानिकारक होगा।"

"मैं सब तरह के कष्ट झेलने के लिए तैयार हूँ, किंतु नहुष की पत्नी बनकर नहीं रहूँगी।" शचीदेवी ने उत्तर दिया।

"नहुष घमण्डी हो पतन की स्थिति में पहुँच गया है। इसलिए फिलहाल शचीदेवी को उसके पास भेजकर थोड़ी अवधि मांग ले तो यह समस्या काल के

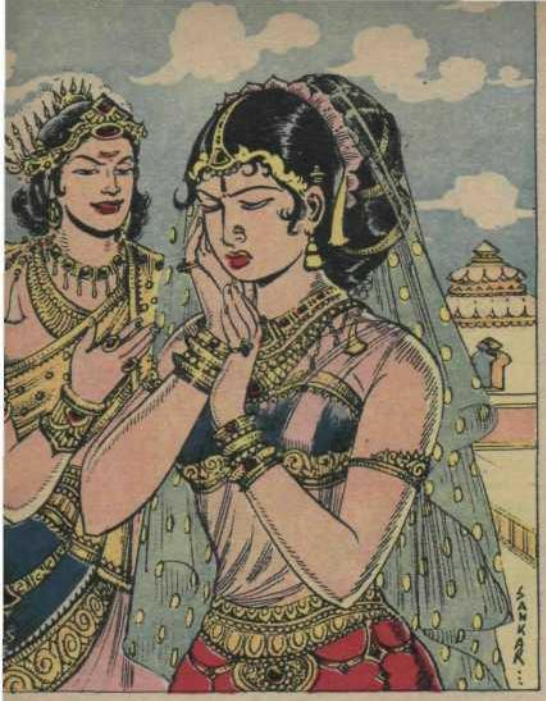

प्रभाव में अपने आप हल हो जायगी।" बृहस्पति ने देवताओं को समझाया।

बृहस्पति के कहे अनुसार शचीदेवी नहुष के पास जाकर बोली–"मुझे तो इन्द्र का समाचार मालूम नहीं हो रहा है। उनका पता लगते ही मैं तुम्हारी हो जाऊँगी।" इस पर नहुष ने मान लिया।

इस बीच मुनियों ने इन्द्र का पता लगाया और उसके पापों के परिहार के हेतु अश्वमेध कराया। इसके बाद इंद्र स्वर्ग को लौट आया, पर नहुष के तेज को देख वह डर गया और कहीं भाग गया। शचीदेवी उसकी खोज़ में चल पड़ी, आखिर इन्द्र से मिलकर बोली–"तुम नहुष का वध करके अपने इंद्रत्व को पुनः पा लो।"

"मेरी दृष्टि में शक्ति के बल पर नहुष पर विजय पाना संभव नहीं है, युक्ति से उसे जीतना होगा। यह युक्ति तुम्हारे हाथों में है। नहुष तुम्हें चाहता है। इसलिए तुम उससे कह दो कि वह पालकी में ही तुम्हारे घर आवे, पर शर्त यह होगी कि वह पालकी ऋषि ही ढोये। इससे नहुष का पतन होगा।" इस प्रकार इंद्र ने शचीदेवी को सलाह दी।

शचीदेवी के मुँह से यह सुनकर नहुष बड़ा प्रसन्न हुआ। तब वह ऋषियों के ढोते पालकी पर शचीदेवी के घर के लिए चल पड़ा। रास्ते में ऋषियों ने नहुष के साथ तर्क किया, इस पर नाराज़ होकर नहुष ने अगत्स्य के सर पर लात मारी। अगत्स्य का क्रोध भड़क उठा। उसने नहुष को सर्प बन जाने का शाप दिया। इस कारण नहुष स्वर्ग से च्युत हो गया। तब इंद्र पुनः अपना पद प्राप्त करके शचीदेवी के साथ आराम से रहने लगा।

शल्य युधिष्ठिर को यह कहानी सुनाकर, दुर्योधन के पास चला गया।

द्रुपद का पुरोहित पांडवों का दूत बनकर जब हस्तिनापुर पहुँचा, तब तक

पांडव तथा कौरवों के पक्षों का समर्थक अपनी अपनी सेनाओं के साथ आ पहुँचे।

पांडवों के पक्ष में युद्ध करने के लिए सात अक्षौहिणियों की सेना उपप्लाव्य में आ पहुँची। महारथी युयुधान एक अक्षौहिणी सेना लेकर आ पहुँचा। चेदि राजा धृष्टकेतु भी उतनी ही सेना लेकर आया। जारासंध का पुत्र जयत्सेन भी एक अक्षौहिणी सेना लेकर आया। पांड्य देश का राजा पहाड़ी योद्धाओं को लेकर युधिष्ठिर की सहायता के लिए आ पहुँचा। द्रुपद अनेक देशों के योद्धाओं तथा महारथी अपने पुत्रों को साथ लेकर बड़ी सेना के साथ आया। मत्स्य देश का राजा विराट असंख्य पहाड़ी सैनिकों को ले आया। इनके अलावा अनेक देशों के राजा विभिन्न झण्डे फहराते कौरवों के साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो आ पहुँचे। महा समुद्र की भांति लगनेवाली उस सेनावाहिनी को देख पांडव बहुत ही प्रसन्न हुए।

उसी समय दुर्योधन के पक्ष में पांडवों के साथ युद्ध करने के लिए ग्यारह अक्षौहिणियों की सेना तैयार हो गयी। नरकासुर का पुत्र भगदत्त चीन किरातों की एक अक्षौहिणी सेना लेकर दुर्योधन से आ मिला। यह अत्यंत शक्तिशाली सेना थी। इसी भांति भूरिश्रवस तथा शल्य भी एक एक अक्षौहिणी सेना के साथ आ पहुँचे। पत्तों तथा फूलों से बनायी गयी कदंब मालाएँ धारण कर हाथी जैसे दीखनेवाले योद्धाओं को कृतवर्मा ले आया। सिंधु-सौवीर देशों से जयद्रद (सैंधव) तथा अनेक अन्य राजा दुर्योधन के पास चले आये। उनकी सेनाएँ एक अक्षौहिणी के बराबर थी। दक्षिण के माहिष्मतीपुर से नील भयंकर हथियार धारण किये हुए योद्धाओं को साथ ले आ पहुंचा। अवंती देश के राजा दो अक्षौहिणी सेनाओं के साथ आ पहुँचे। केकय देश के राजा जो पांच भाई हैं, एक अक्षौहिणी सेना के साथ आये। अन्य देशों से

आयी हुई छोटी-मोटी सेनाएँ मिल कर तीन अक्षौहिणियाँ थीं।

दुर्योधन के पक्ष में जो राजा आये थे, उन्हें ठहराने की जगह हस्तिनापुर में न थी। उन सेनाओं को पंचनद, कुरू जांगल, रोहतक के जंगल, अहिच्छत्र, कालकूट, गंगाकूट, वारणम, वाटधान तथा विशाल यमुना तट पर भी शिविर बना कर ठहराया गया।

इस प्रकार जहाँ तहाँ ठहरायी गयी सेनाओं को देखते द्रुपद का पुरोहित हस्तिनापुर पहुँचा। उस वृद्ध ब्राह्मण का विदुर, भीष्म तथा धृतराष्ट्र ने उचित रूप में आदर-सत्कार किया और पांडवों के संबंध में कुशल प्रश्न भी पूछे। उस ब्राह्मण ने भी दुर्योधन आदि का कुशल-क्षेम जान कर भरी सभा में यों कहा :

"सभासदो, धृतराष्ट्र तथा राजा पांडु एक ही राजा के पुत्र हैं। उनके बाप-दादों की जायदाद में दोनों का बराबर का हिस्सा है। ऐसी हालत में धृतराष्ट्र के पुत्रों का अपने पिता की संपत्ति का भोग करने तथा पांडु के पुत्रों का उस संपत्ति का भोग न करने का कारण क्या है? आप सब अभी भूले न होंगे कि दुर्योधन ने पांडवों को अपनी संपत्ति के भोग करने से वंचित रखने के लिए उन्हें कैसी-कैसी यातनाएँ दी हैं। पांडवों की आयु दीर्घ थी, वरना वे कभी के मर गये होते। अलावा इस के पांडवों ने स्वयं अपनी शक्ति के बल पर जिस राज्य को जीता था, उसे भी धृतराष्ट्र के पुत्रों ने जुएँ में हड़प लिया है। दुष्ट शकुनि ने उन के दुष्ट कार्यों में सहायता पहुँचायी है। बारह वर्ष तक पांडव अपनी पत्नी के साथ जंगलों में यातनएँ झेलते रहें। विराट नगर में उन लोगों ने जैसी ज़िंदगी बितायी, वह सुनने तथा कहने योग्य भी नहीं है। इतना सब-कुछ होने के बावजूद भी पांडव कौरवों के साथ शांति चाहते हैं। उनके मन में कौरवों के साथ युद्ध करने की कामना बिलकुल नहीं है। युद्ध के द्वारा जनता

का क्षय होता है। इसलिए वे चाहते हैं कि किसी प्रकार की हानि किये बिना वे अपना राज्य प्राप्त करे। दुर्योधन का अपने अपार बल पर विश्वास है। अलावा इसके उनके पास असंख्य सेनाएँ आ पहुंची हैं। इसलिए वह इस भ्रम में है कि उसकी जीत अवश्य होगी। दुर्योधन की सेना में चार अक्षौहिणियों के होने से क्या हुआ? पांडवों की सेना में सात्यकी, भीम, नकुल तथा सहदेव प्रत्येक एक एक अक्षौहिणी के समान है। परंतु अर्जन अकेला ही इन चारों अक्षौहिणियों के बराबर है। कृष्ण की भी यही बात है। ऐसी शक्ति रखनेवाले पांडवों के साथ कोई भी बुद्धिमान् व्यक्ति युद्ध करने के लिए तैयार न होगा। अलावा इस के पांडवों के साथ मैत्री करने के लिए यह समय चूक गया तो फिर असंभव है।"

द्रुपद के पुरोहित के वचन सुनने के बाद भीष्म ने कहा–"हे ब्राह्मणोत्तम, तुम्हारी बातें कटु लगती हैं। परंतु उनमें सचाई भी है। पांडवों का युद्ध के लिए सन्नद्ध होना तथा शांति की कामना करना दोनों उचित ही है। पांडवों ने असंख्य यातनाएँ झेलीं, यह भी सत्य है। अर्जुन अनेक अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञाता है। वज्रायुध रखने वाला इन्द्र भी उसके समक्ष ठहर नहीं सकता। अन्य लोगों की बात भी क्या कही जाय?"

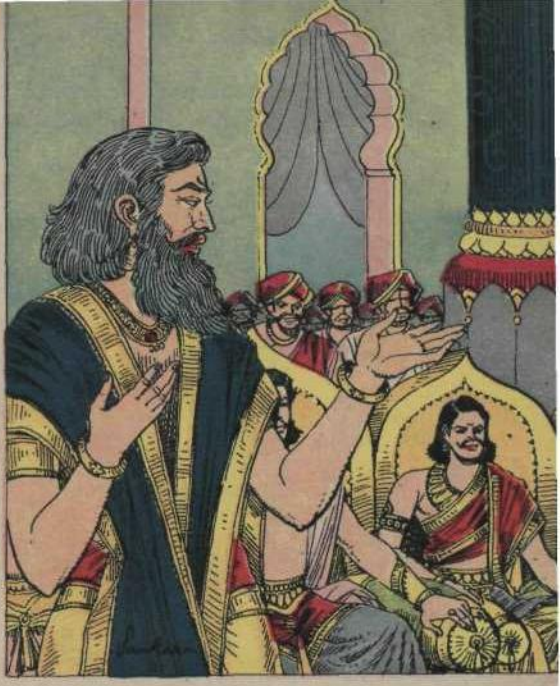

भीष्म की बातें पूरी भी न हो पायी थीं कि कर्ण उठ खड़ा हुआ और बोला– "विप्रवर, आपने जो कुछ बताया, उसे सब जानते हैं। युधिष्ठिर शर्तों के अनुसार जुएँ में हार कर वनवास करने गये हैं। फिर वह मूर्ख की भांति खोये हुए राज्य की मांग कैसे कर सकता है? पांडवों की शक्ति से डर कर दुर्योधन उन्हें एक क़दम रखने के बराबर की ज़मीन तक न देगा। यदि उन्हें सचमुच राज्य चाहिये तो पुनः वनवास करना होगा। राज्य के वास्ते उन लोगों ने धर्म को त्याग दिया और युद्ध के लिए तैयार हो गये हैं।

भीष्म ने खीझकर कहा–"कर्ण, तुम ऐसी व्यर्थ की बातें क्यों करते हो? क्या यह बात भूल गये कि अर्जुन ने हम सब को अकेले ही पराजित किया था? इस ब्राह्मण की सलाह के अनुसार नहीं चलेंगे तो हम अर्जुन की क्रोधाग्नि में पतिंगे की भांति झुलस कर मर जायेंगे।"

इस पर धृतराष्ट्र ने दखल देकर कर्ण को डांटा और उसे चेतावनी दी कि भीष्म जो कुछ कर रहे हैं, वह हमारे हित के वास्ते ही। तब द्रुपद के पुरोहित से कहा–"विप्रवर, मैं इस प्रश्न पर खूब सोच-समझ कर अपना उत्तर संजय के द्वारा पांडवों के पास पहुँचा दूंगा। आप लौट जाइये।"

धृतराष्ट्र ने सादर उस ब्राह्मण को विदा किया, तब संजय को बुलवा कर कहा–"संजय, तुम तत्काल ही उपप्लाव्य में जाओ। युधिष्ठिर के कुशल-क्षेम जान लो, कष्टों से विमुक्ति पाने पर उनका अभिनंदन करो। इसके उपरांत कृष्ण तथा पांडवों की सहायता करने आये हुए सभी राजाओं के कुशल जान लो। हमारे द्वारा ही पांडवों ने अतीव कष्ट झेले, परंतु उनके द्वारा हमें आज तक कोई कष्ट नहीं हुआ। यह सोचने पर ही मुझे भय होता है कि युधिष्ठिर रुष्ट होकर हमारे साथ युद्ध करेगा। भीम और अर्जुन का सामना करने की शक्ति किसमें है? तुम उन्हें कैसे शांत करोगे, यह तुम्हीं जानो। पांडवों के पक्ष के लोगों को समझाकर युद्ध के होने से रोक दो।" इसके उपरांत संजय रथ पर सवार हो उपप्लाव्य में जा पहुँचा। युधिष्ठिर से कुशल-क्षेम पूछे। तब संजय ने उच्च स्वर में यों कहा:

"धृतराष्ट्र ने शांति की कामना करके ही मुझे आप लोगों के पास भेजा। पांडवों को भी शांत हो जाना उत्तम है। सारा जगत तो आदर्श पुरुषों के रूप में उनकी पूजा करता है। ऐसी हालत में उनमें छोटा सा भी दोष हो तो वह सौ गुने ज्यादा दिखाई देगा। विजय और पराजय का निर्णय करना

भी कठिन है। कौरवों का वध कर के राज्य छीन लेने की बात सोचना भी उचित नहीं है। ज्ञातियों के वध करने की अपेक्षा मृत्यु बेहतर है। पांडवों की शक्ति देवताओं के लिए पराजित कर सकने की नहीं है। कौरवों का बल भी इसी प्रकार है। मेरा विश्वास है कि इन दोनों शक्तियों के बीच टकराहट होगी तो चाहे विजय किसी की भी क्यों न हो जाय, पर किसी भी पक्ष को सुख प्राप्त न होगा। मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि आप लोग शांति का कोई मार्ग ढूंढ ले।"

संजय के वचन सुनकर युधिष्ठिर ने कहा–"संजय, क्या मैं युद्ध के वास्ते ललचाने की इच्छा से कभी कुछ बोला? शांति के द्वारा जो चीज़ संभव है, उसके वास्ते युद्ध करने की इच्छा रखनेवाला मूर्ख नहीं हूँ मैं। बुद्धिमान को चाहिये कि वह जैसे अपने सुख के बारे में सोचता है, वैसे ही अन्य लोगों के सुख के बारे में भी सोचे। जंगल में दावानल पैदा करके उसके प्रज्वलित होते देख 'ओह मेरे लिए खतरा है!" बतानेवाला क्या मूर्ख नहीं कहलायगा? दुष्ट दुर्योधन का समर्थन करते हुए धृतराष्ट्र सुख कैसे प्राप्त कर सकता है? जिस दिन कौरवों ने कपट जुआ खेलकर हमें धोखा दिया, उसी दिन

उनका विनाश प्रारंभ हो गया है। फिर भी कौरवों के साथ शांति पूर्वक सहजीवन करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। इसके पूर्व उन लोगों ने हमारे साथ जो अत्याचार किये हैं, उन सब को मैं भूल जाऊँगा। परंतु मुझे केवल इंद्रप्रस्थ पर शासन करने का अधिकार मात्र दे। दुर्योधन को ही राजराज बने रहने दो।'

इस पर संजय ने कहा–"युधिष्ठिर, तुम आज तक धर्म से च्युत नहीं हुये हो। क्या तुम तुच्छ राज्य-सुख के वास्ते अपने यश को शाश्वत रूप में कलंकित करोगे? युद्ध की बात भूल जाओ। कौरव तुम्हें राज्य में हिस्सा नहीं देंगे। मैं समझता हूँ

कि युद्ध करके राज्य पाने की अपेक्षा तुमको अपने भाइयों के साथ याचना करते हुए ज़िंदगी बिताना यशोदायक है।"

संजय ने धर्म तथा अधर्म की जो व्याख्या की, उसे स्वीकार न करते हुए युधिष्ठिर ने कहा–"संजय, इन दोनों धर्मों के साथ एक तीसरा धर्म आपद्धर्म भी होता है। विपत्तियों से छूटने के लिए अधर्म करना भी धर्म कहलता है। फिर भी कृष्ण जो सलाह देंगे, मैं उसी को अपना धर्म मानूंगा।"

इस पर कृष्ण ने संजय से कहा–"तुम शांति की बात करते हो। क्या राजाओं का युद्ध करना धर्म नहीं है? अधर्म का पक्ष लेनेवाले तो धृतराष्ट्र के पुत्र हैं। दुर्योधन ने पांडवों की संपदा का अधर्म के साथ ही हरण किया है। उस में राजधर्म ही कहाँ रहा? चोर तथा दुर्योधन में अंतर क्या है? आज तक उसने पांडवों की संपदा का अनुभव किया है। अब वह उनकी संपत्ति को वापस क्यों नहीं देता? अन्यों के राज्य का अनुभव करने की अपेक्षा निजी राज्य हज़ार गुना अच्छा होता है। उसके वास्ते युद्ध करके मृत्यु को प्राप्त होना भी हमें पसंद है। तुम कौरवों की सभा में स्पष्टता के साथ यह बात कह दो।"

अंत में संजय ने सबसे निवेदन किया कि उसके द्वारा कोई भूल हुई हो तो क्षमा करे। सबसे विदा लेकर जा ही रहा था, तब युधिष्टिर ने कहा–"संजय, हम हृदयपूर्वक शांति की कामना करते हैं। यदि धृतराष्ट्र भी सचमुच शांति चाहते हैं तो उनसे कह दो कि हमें राज्य में कम से कम थोड़ा सा हिस्सा दे। हम पांचों भाईयों के लिए पांच गाँव भी दें तो हम तृप्त हो जायेंगे। कुशस्थल, वृकस्थल, माकंदी, वारणावत नामक गाँवों के साथ और एक गाँव जो उन्हें पसंद हो, जोड़कर देने के लिए कहो। तब हम सब सुख के साथ रह सकते हैं। मैं शांति के लिए जिस प्रकार सन्नद्ध हूँ, वैसे ही युद्ध के लिए भी तैयार हूँ।"

यह संदेशा लेकर संजय हस्तिनापुर के लिए लौट गया।

शिवपुराण

[२२]

विश्वनाथ तथा विशालाक्षी को काशी नगर में वास करते देख वेदव्यास के मन में भी यह विचार आया कि वह भी कुछ समय तक काशी का निवास करे। इस विचार के आते ही वह अपने सारे शिष्यों के साथ काशी आ पहुँचा। उसके शिष्यों में वैशंपायन, जैमिनी, पैल, सुमंत इत्यादि महामहिम थे।

उन सब ने प्रातःकाल कालकृत्यों से निवृत्त हो गंगा में स्नान करके संध्यावंदन किया, गायत्री जाप करके शिव की अर्चना की, मुक्तिमण्डप में जाकर मध्याह्न तक शिवपुराण का पाठ किया, तब भिक्षाटन के हेतु हर एक एक दिशा में चले गये।

उस वक़्त विश्वेश्वर ने विशालाक्षी से कहा–"हम व्यास के मन की थाह लेंगे। उसे कोई भिक्षा न दे, ऐसा प्रबंध करो।"

विशालाक्षी ने मान लिया और काशी नगर की प्रत्येक गृहिणी के मन में भिक्षा न देने की भावना पैदा की। व्यास जब "भिक्षां देहि" चिल्लाते घर घर घूमने लगे, तब विशालाक्षी के इच्छानुसार प्रत्येक गृहिणी यह कहने लगी–"अभी रसोई नहीं बनी।" "फिर आ जाओ।" कुछ गृहिणियों ने तो द्वार तक नहीं खोले।

व्यास के साथ जो बीता, यही बात उनके शिष्यों के प्रति भी हुई। दिन के ढलने तक सब लोग सारे नगर को छानते रहे और आखिर निराश हो भूख के मारे थके-मांदे मठ को लौट आये।

"मुझे कहीं एक दाना तक नहीं मिला, क्या तुम लोगों को भिक्षा प्राप्त हुई?" व्यास ने अपने शिष्यों से पूछा। शिष्यों ने बताया कि उन्हें भी भिक्षा प्राप्त नहीं हुई।

अंतिम पृष्ठ का चित्र

"न मालूम आज सुबह हमने किस पापी का चेहरा देखा है?" व्यास ने कहा।

सात दिन तक बराबर यही क्रम रहा, व्यास की समझ में नहीं आया कि इस नगर पर एक जमाने में दिवोदास ने शासन किया था और फिलहाल विश्वनाथ के रहनेवाले काशी नगर में जहाँ की प्रत्येक गृहिणी एक अन्नपूर्णा कहलाती है, वहाँ पर उन्हें ये उपवास क्यों करने पड़ रहे हैं! उपवासों के कारण वैशंपायन, सुमंत, पैल, जैमिनी, देवल और दाल्भ्य थककर शिथिल हो बेहोश से हो गये।

आठवाँ दिन भी आ पहुँचा। सब ने कालकृत्यों से निवृत्त हो काशी के सभी देवताओं को प्रणाम किया, तब व्यास और उनके शिष्य भिक्षा के लिए चल पड़े।

व्यास को एक भी घर से भिक्षा प्राप्त नहीं हुई। उन्हें असहनीय क्रोध आया। उनके भाल पर पसीना छूटने लगा। वे यह विचार करके कमण्डलु से शाप का जल लेने को हुए कि अपने भिक्षा पात्र को पत्थरों पर मारकर तोड़ दे और काशी के निवासियों को यह शाप दे कि वे तीन पीढ़ियों तक विद्या, धन तथा भक्ति से वंचित रहें? परंतु उनका हाथ काँप उठा, हाथ ऊपर भी रह गया।

उसी वक़्त पचास वर्ष की एक गृहिणी जो असंख्य आभूषण धारण किये हुए थीं, अपने घर का दर्वाजा खोल बाहर आयीं और बोलीं–"हे ब्राह्मण, शाप मत दो, मेरे निकट आओ।"

व्यास अत्यंत प्रसन्न हुए और उस नारी का परिचय तथा वर्ण तक जानने का प्रयत्न किये बिना उसे प्रणाम किया। व्यास के उस नारी के समीप जाते ही उसने कहा– "भिक्षा प्राप्त न होने पर तुम क्या काशी नगर को शाप देते हो? तुम्हारे हृदय की शुद्धि का पता लगाने के हेतु विश्वेश्वर ने ऐसा किया है, वरना काशी नगर में तुम्हारे लिए भोजन की क्या कमी है? क्या तुमने नहीं सुना कि दुपहर को

अतिथियों के समय पर अन्नपूर्णा सोने की कलछी से अमृततुल्य क्षीर देती है। सात दिन भोजन न मिलने मात्र से तुम अपनी धीरता को खो बैठे और शिवजी की दूसरी पत्नी जैसी काशी नगरी का तुमने सर्वनाश करना चाहा। तुमने यह साबित किया कि भूख मनुष्य के द्वारा कैसा पाप करवाती है! आओ, मैं तुम्हें भिक्षा देती हूँ।"

ये बातें सुनकर व्यास ने कहा–"माँ, इतने दिन बाद मेरे कानों में ऐसी मीठी बात सुनने को मिली, क्या भिक्षा ग्रहण करने के लिए मैं अकेले आऊँ अथवा मैं अपने शिष्यों को भी साथ लाऊँ? सभी तो भूखे हैं। हम सब को तुम जो भी उचित समझें, वह भिक्षा दो, हम उसे बराबर बाँट कर खा लेंगे।"

व्यास के मुँह से यह बात सुनकर वह नारी मुस्कुरा उठीं और बोलीं–"बेटा, मध्याह्न की पूजाएँ गंगा तट पर समाप्त कर तुम सब चले आओ। सब को भर पेट खाना खिलाऊँगी।"

इसके बाद व्यास अपने तीन सौ शिष्यों के साथ गंगा तट पर गया। दुपहर की पूजाएँ समाप्त कर उस नारी के घर लौट आया। उन्हें वह वृद्ध नारी घर के भीतर ले गयीं। भोजनशाला में पीढों पर

बिठाकर सबके आगे बड़े-बड़े केले के पत्ते परोसे।

वृद्धा ने सब अतिथियों में अक्षत तथा धूप बांटे, तब पंक्तियों के बीच खड़े होकर बोलीं–"बेटे, अब तुम सब परिषेशन करके आराम से भोजन करो।"

इस पर व्यास तथा उसके शिष्यों ने विष्मय में आकर एक दूसरे के चेहरे देखे। पत्तलों में भोजन-पदार्थ न थे और परोसने के लिए रसोई बनाने की गंध तक न थी।

"यह बूढ़ी औरत हमें खाली भोजन दे रही है। आज भी हमें उपवास करना होगा।" सब ने अपने मन में सोचा।

वे सब यह सोच ही रहे थे, तभी कुछ औरतों ने आकर परिषेशन के लिए पानी दिये।

"बेटे, देर हो रही है, अब खाना शुरू करो।" वृद्धा ने कहा।

सब अतिथियों ने परिषेशन समाप्त करके देखा कि उनके पत्तलों में अपूर्व मिष्टान्न परोसे हुए हैं। जिन जिन को जो पदार्थ पसंद हैं, उनके पत्तलों में वे सब पदार्थ परोसे गये हैं।

सब ने यह सोचकर खाना समाप्त किया कि यह वृद्धा साक्षात् अन्नपूर्णा देवी होगी।

भोजनोपरांत वृद्धा ने व्यास तथा उनके शिष्यों के विश्राम करने के हेतु आवश्यक प्रबंध किया।

थोड़ी देर बाद विश्वनाथ पार्वती को साथ ले वहाँ पहुँचे जहाँ व्यास तथा उनके शिष्य विश्राम कर रहे थे। पार्वती के मुख मण्डल पर शांति विराजमान थी, पर शिवजी के चेहरे पर क्रोध टपक रहा था।

शिव-पार्वती को देख सब ने प्रणम किये और हाथ जोड़कर खड़े हो गये।

शिवजी पार्वती समेत एक वे ऊँचे आसन पर बैठ गये और व्यास की ओर क्रोध भरी दृष्टि प्रसारित करते हुए बोले– "अरे दुष्ट, महाभारत के लिखनेवाले मूर्ख, तुम घमण्ड में आकर मेरी पत्नी-जैसी काशी नगरी को शाप देने की सोच रहे हो? तुम्हारा काशी में प्रवेश करना ही अपराध है। तुरंत तुम तथा तुम्हारे शिष्य काशी की सीमा पार कर चले जाओ।"

व्यास ने पार्वती तथा परमेश्वर के चरणों में प्रणाम किया और अपने शिष्यों के साथ काशी छोड़कर चले जाने के लिए तैयार हो गये।

यह दृश्य देख पार्वती जी से रहा नहीं गया, वे बोलीं–"बेटा, तुम चिंता नहीं करो। तुम और कहीं मत जाओ, दक्षाराम में जाकर भीमेश्वर की उपासना करो। सब प्रकार से तुम्हारा शुभ होगा।"

पार्वतीजी की सलाह के अनुसार व्यास अपने शिष्यों के साथ भीमेश्वर की अर्चना करने के लिए दक्षाराम चले गये।

१३२. "सौ वर्ष का वृक्ष"

कारिबियन समुद्र में पोटोरिको की पूर्वी दिशा में स्थित "वर्जिन" टापू अमेरिका वासियों के लिए बिनोद तथा यात्रा स्थल हैं। सर्वप्रथम १४९३ में कोलंबस ने इन टापुओं का संदर्शन किया। १९१७ में ये टापू अमेरिका के अधीन में आ गये। ये कुल तीन टापू हैं। इनके नाम हैं; सेंट टामस, सेंट जोन, सेंट क्राय। यहाँ पर के अधिकांश निवासी नीग्रो हैं। वे यात्रियों पर निर्भर हो अपनी जीविका चलाते हैं। सुंदर समुद्री तट तथा समशीतोष्ण आब-हवा यात्रियों को आकृष्ट करते हैं।

इन टापुओं के विचित्र दृश्यों में एक "सौ वर्ष का वृक्ष" है। इसके पत्ते मोटे होते हैं। कहा जाता है कि सौ वर्ष में एक बार इसमें फूल लगते हैं, इसीलिए इस वृक्ष का यह नाम पड़ा है। इसके फूल पीले तथा गुच्छेदार होते हैं। फूल पांच वर्ष की आयु में भी लगते हैं, किंतु फूलों के लगते ही यह वृक्ष मर जाता है।

Photo by S. B. Takalkar

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

प्रातः सुनकर इसकी बांग !

प्रेषक :
रमेशकुमार माटा

Photo by S. B. Takalkar

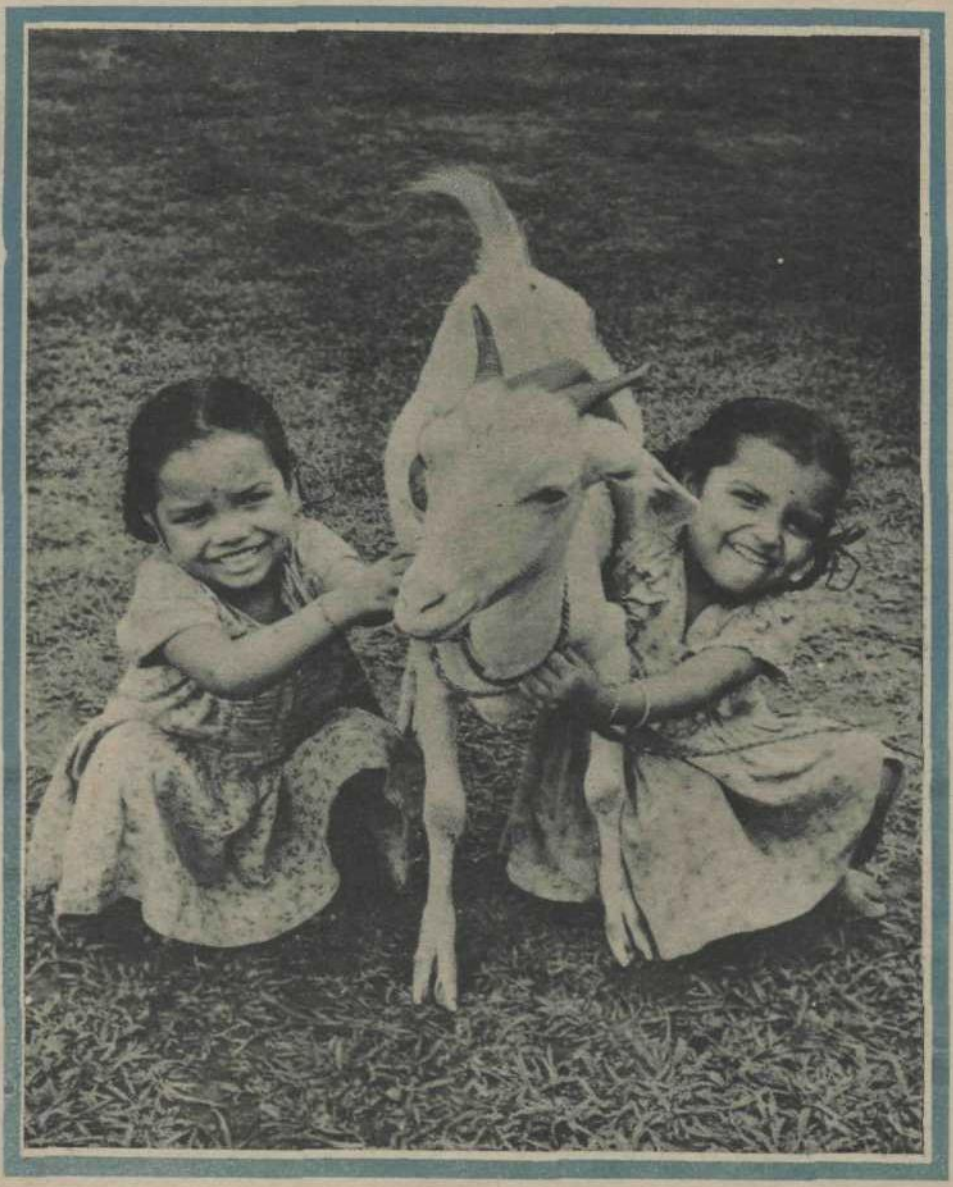

ब्लाक ३, चन्दनमहल,
बंबई-५५

बच्चे करते दूध की मांग !!

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

*

★ परिचयोक्तियाँ जनवरी ५ तक प्राप्त होनी चाहिए।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ मार्च के अंक में प्रकाशित की जायंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

खोयी अंगूठी	...	२	सोने की चिड़िया	...	३९
यक्ष पर्वत	...	९	पंचायत	...	४३
राक्षस-विवाह	...	१७	महाभारत	...	४९
समय की सूझ	...	२२	शिवपुराण	...	५७
वादे का पक्का	...	२५	संसार के आश्चर्य	...	६१
एक दिन का सुलतान	...	२९	फोटो-परिचयोक्ति	...	६४

दूसरा मुखपृष्ठ:
मानव में मानव

तीसरा मुखपृष्ठ:
रबर बेलून

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

ठीक समय पर सही काम...

पिताजी, आज हमारी स्कूल में क्रिकेट मैच था लेकिन मुझे तो जल्दी ही 'आउट' कर दिया।

अच्छा ? क्यों, क्या हुआ बेटे ?

हुआ यह कि सुशील ने 'शॉर्ट बॉल' दी, मैंने 'कट' करना चाहा लेकिन बॉल 'एज' पर लगी, उसली और विकेट कीपर ने झट 'कैच' कर लिया।

बुरा हुआ ! लेकिन बेटे, शार्ट बॉल के लिए तो कई स्ट्रोक हैं, जैसे 'हुक'। अपनी दाँयी ओर ऐसे घुमाते कि बॉल सुरक्षित बाँयीं ओर ऊँचाई पर आ जाती। फिर 'बेट' ऊपर की ओर घुमाते और हिट कर देते।

भरपूर ताकत से मारते तो इस तरह स्मूथा घूम जाते कि विकेट कीपर शायद ठीक सामने होता।

दाँत दिखाओ, बेटे, साढ़े आठ बजने वाले हैं। जल्दी सो जाएँ। लेकिन हाँ, तुमने अपने दाँत तो साफ कर लिए हैं न ?

पिताजी, मैंने 'क्लिनर' के साथ कुल्ली तो किए थे।

नहीं बेटे, ऐसे नहीं चलेगा। तुम्हें अपने दाँत हर रात और सवेरे ब्रश करने ही चाहिए। इससे दाँतों में कैसे सारी उम्र-दाग निकल जाएँगे, दाँतों में सड़न नहीं होगी। तुम्हें मसूड़ों की भी मालिश करनी चाहिए ताकि वे स्वस्थ और मजबूत रहें।

हाँ, पिताजी !

चलो, हम दोनों फ्लोरहैन्स टूथपेस्ट से अपने दाँत ब्रश कर लें।

फ्लोरहैन्स
दाँतों के एक डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट।

49F-203R-HIN

वाह!

कितना मीठा,
कितना मज़ेदार!

रंगबिरंग
कॅड्बरिज़
मिल्क चॉकलेट

जेम्स

नाचो-गाओ,
धूम मचाओ,

कॅड्बरिज़

जेम्स का
मज़ा उड़ाओ!

सिर्फ़
१ रु.

AIYARS-C.165 HN

Photo by: MADAN GOPAL

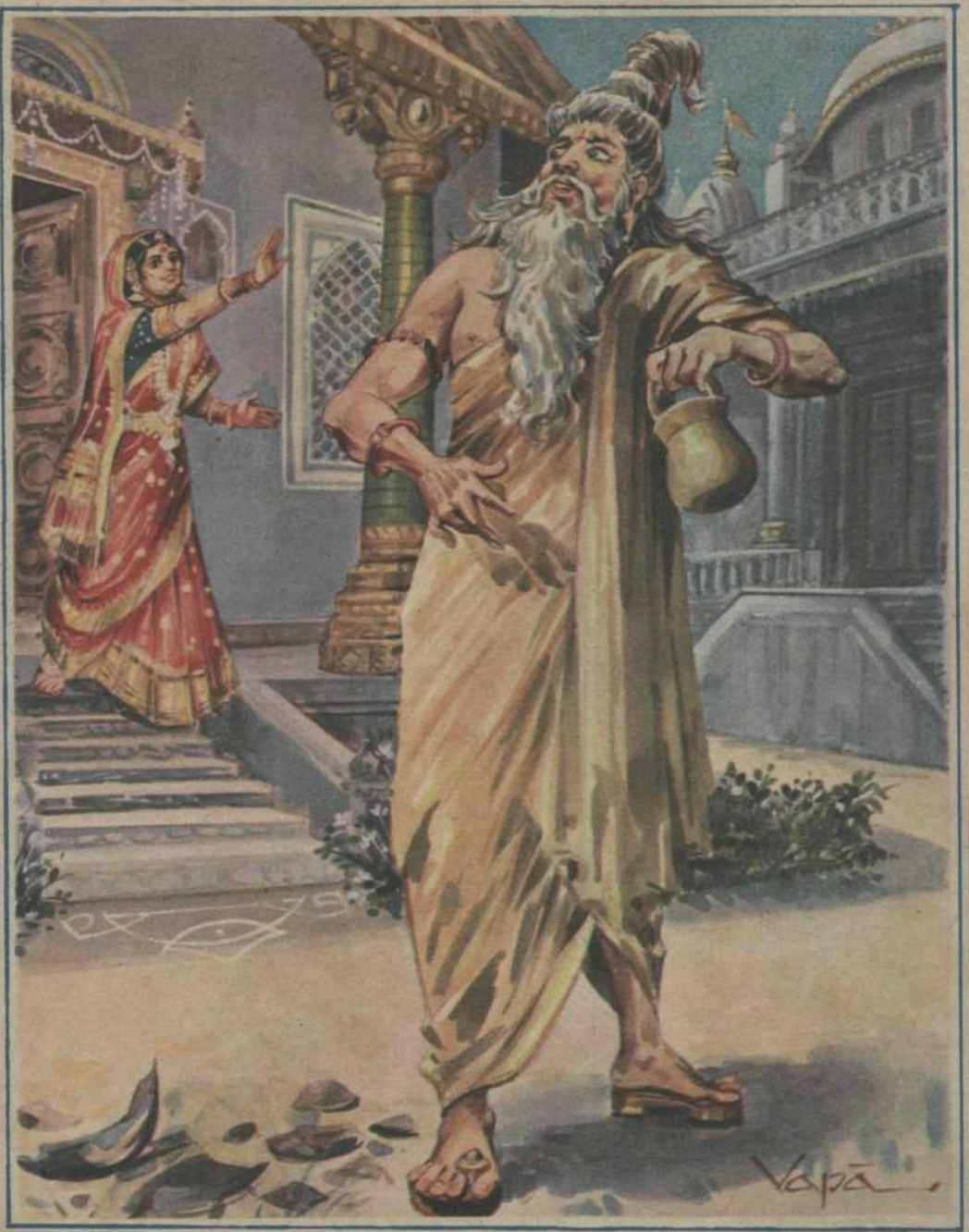

शिवपुराण